विवाह  पद्धति

भाषा टीका सहित

श्री मद्दैवज्ञवर्य पं० शिवरामदत्तात्मजेन

ज्योतिषाचार्येण श्री राम शरण दास शर्मणा संकलिता

जिस को

पं० देवीदयालु ज्यो० एण्ड सन्ज़

ने

पंचांग दिवाकर कार्यालय १४७४ नई सड़क दिल्ली–६
से
प्रकाशित किया।

सं० २०२२] [छठा संस्करण मूल्य २.५० पैसे

प्रकाशक—
पं० शिवरामदत्त ज्यो० एण्ड सन्
पंचांग दिवाकर कार्यालय गेट माई हीरां,
जालन्धर शहर।

मुद्रक :
स्काईलार्क प्रिंटर्स,
दिल्ली।

॥ भूमिका ॥

सब सज्जनों को विदित ही है कि शास्त्रों में चार प्रकार के आश्रम कहे हैं, पहिला ब्रह्मचर्याश्रम १ दूसरा गृहस्थाश्रम २ तीसरा वाणप्रस्थाश्रम ३ और चतुर्थ सन्यासाश्रम ४ कहा है। ब्रह्मचर्याश्रम को पालन करता हुआ मनुष्य विद्याध्ययन करने के अनन्तर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे। बिना आश्रम के एक क्षण भी नहीं रहना चाहिये ऐसा शास्त्रों में कहा है। "अनाश्रमी न तिष्ठेत् क्षणमेकमपि द्विजः, एक आश्रम का पालन कर दूसरे आश्रम में प्रवेश करना कहा है—'आश्रमादाश्रमंगच्छेदेष धर्मः सनातनः'।

ब्रह्मचर्याश्रम-वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, इसी तरह देव ऋण, पितृ ऋण, और ऋषि ऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाला तथा धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि को देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम को प्रधान माना गया है, ऐसा कश्यप जी ने कहा है 'अथातः संप्रवक्ष्यामि गृहस्थाश्रममुत्तमम्'। य आधारोऽन्याश्रमाणां भूतानां प्राणिनां तथा। ऋणत्रयच्छेदकारी धर्म कामार्थ सिद्धिदम्। और बाकी संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर हैं, क्योंकि विवाहादि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधानादि समस्त संस्कार हो सकते हैं इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान हैं।

गृहस्थाश्रम में भी सद्गुणयुक्ता स्त्री का होना परमावश्यक है क्योंकि रत्न, स्वर्ण और अनेक प्रकार के अलंकारादि उपभोगों के होते हुए घर में यदि सद्गुण युक्ता स्त्री न हो तो वह सब व्यर्थ है उनकी कुछ शोभा नही होती' ऐसा महर्षियों का कथन है। 'रत्न हेमाद्यलंकाराः भोगा मृगमदादयः। व्यर्थाः सर्वे न राजन्ते हर्म्याणिस्त्रियमन्तरा। एतत्सर्व स्थितं स्त्रीषु शीलवृत्तान्वितासु च। तैसे ही अग्निहोत्रादि

नित्य कर्मा का भी बिना स्त्री के अधिकार नहीं है और स्त्री के बिना पुत्रोत्पत्ति नहीं-पुत्र के अभाव में परलोक में दुर्गति होती है। इस लिये गृहस्थाश्रम में प्रवेश होने के लिये समावर्तन संस्कार के पश्चात् मनुष्य को अवश्य विवाह करना चाहिये। वसिष्ट जी कहते हैं कश्चिद्गृहाश्रम समो न परोऽस्ति धर्मः। सोऽपिस्थित सुगुणवृत्तयुतांगनासु। उद्वाह लग्नवशतो गुणवृत्त लब्धिस्तासां तथा विघसुलग्नमतः प्रवच्मि अतः विवाह संस्कार कर्म शुभ लग्न में करना परमावश्यक है। यदि विवाह संस्कार कर्म शुभ लग्न में हो तो स्त्री के गुणों की वृद्धि होती है।

वर कन्ययोर्वरणे शुद्धि विचारः

वाक् दान (सबंधं) करने से पहले वर और कन्या के सपिंढ्य शुद्धि-गोत्र और प्रवर शुद्धि तथा जातक और भमेलनादि शुद्धि का विचार करे, जो कि लिखा है 'सापिंढ्य' गोत्र शुद्धि च शीलं सामुद्रिकाणी च जातकादिभमेलं च वीक्षयं वाग्दानतः पुरा' चौथी पीड़ी से लेकर तीन पीड़ी अर्थात् चौथी पांचवीं और छटी (पीड़ी) तक के पुरुष (लेपभाग भुज) कहलाते हैं, और पिता आदि से तीन (पीढ़ी) अर्थात् पिता पितामह और प्रपितामह यह तीन (पीड़ी के पुरुष पिंडभागी होते हैं और सातवां पिंड देने वाला यह सात पुरुष तक सापिंढ्य होता है, पितृबन्धु पक्ष में (सात पीड़ी) तक और मातृबन्धु पक्ष में (पांच पीड़ी) तक वर और कन्या नहीं होना चाहिए, जो कि लिखा है-(देवलः) पंचमात्सप्तमादूर्ध्वं मातृतः पितृतः क्रमात्। सपिंडतानि वर्तेत सर्व वर्णेष्वयं विधिः। असपिंडांज पितृतः सप्तमात्पौरषात्परं मातृतः पंचकादूर्ध्वम् समानार्ष गोत्रजाम्, इसलिए जहां तक पिंड मिला है वहां तक विवाह निषेध है।

गोत्र तथा प्रवर शुद्धिः

आपस्तम्ब ने कहा है 'सगोत्राय दुहितरं न प्रयच्छेदित्यापस्तम्बोक्तेः' सगोत्री को कन्या न देवे।

और गौतम ने यह कहा है कि जिसके गोत्र प्रवर एक हो उसके संग विवाह न करे, 'असमान प्रवरैश्च
५ विवाह इति गौतमोक्तेश्च' माता के गोत्र में भी विवाह न करे, जो कि लिखा है-(शातातपः) मातुलस्य सुता
मूढ वा सातृ गोत्रां तथैव च समान प्रवरां चैव गत्वा चांद्रायणं चरेत्' सर्वेषां मातृगोत्रं वर्ज्येमिति मंजरी
कारः' इसलिए गोत्र और प्रवर दोनों ही विवाह में वर्जित कहे हैं।

यह सब देशाचर और कुलाचार के अनुकूल है—ऐसा (चतुर्विंशति) मत में कहा—'यस्तुदेशानुरूपेण कुलमार्गेण चोद्वहेत्। नित्यं सव्यवहार्य : स्याद्वेदाच्चैतत् प्रदृश्यते' तैसे ही भृगु जी ने कहा है (भृगुः) यस्मिन्देशे य आचारः पारंपर्य कम्यगतः। वर्णानां किल सर्वेषां स सदाचार उच्चयते' इस प्रकार वर और कन्या की सपिंडय शुद्धि का विचार कर वर के गुणों की परीक्षा करे।

वर के गुण

कुल जिसकी अच्छी हो, चाल चलन अच्छे हों, किसी प्रकार की विद्या को जानने वाला हो, जिसका शरीर किसी महाव्याधि से ग्रसित न हो, आयु जिसकी अत्यधिक न हो ऐसे वर के प्रति कन्या को देवे, जो कि लिखा है (वशिष्टः) कुलं च शीलं च सनाथतां च विद्यां च वित्तं च वपुर्वयश्च। वरे गुणान्सप्त परीक्ष्यदेया कन्याबुधैः शेषमाचिंत्यनीयम्।

वर के दोष

नेत्र हीन गूंगा (मूक) कर्महीन, कुष्ठ, मृगी, राजयक्ष्मादि रोगी से युक्त नपुंसक—सदा परदेश में रहने वाला, जाति से पतित, अत्यन्त दूर, अत्यन्त समीप, अपने से अत्यन्त धनी, अथवा, अत्यन्त निर्धनी, आजीविका से रहित मूर्ख, संसार से विरक्त मोक्ष को चाहने वाला, और कन्या से तिगुनी अवस्था वाला

(वृद्ध) और कन्या से जो छोटी आयु वाला हो, ऐसे वर वर को कन्या नहीं देनी चाहिए, चाहे कन्या ऋतुमती भी होकर उमर भर घर में बैठी रहे तो भी उपरोक्त दोषों से दूषित वर को कदापि कन्या न देवे, इन दोनों
६ को देखते हुए भी जो ऐसे वर को कन्या देता है वह उस कन्या के शोक-संताप का भागी होता है और नरक गामी होता है। ऐसा कारका निबन्ध में कहा है-'अंधो मूकः क्रियाहीनश्चपस्मारी नपुंसकः दूरस्थः पतितः कुष्ठी दीर्घ रोगी वरोनसत। नात्यासन्ने नाति दूरे नात्याढ्ये नातिदुर्बल। वृत्तिहीने च मूर्खे च पटसु कन्या न दीयते। मर्खो निर्धन दूरस्थ शूर मोक्षाभिलाषिणां त्रिगुणधिक वर्षाणां नदेयाज्जातुकन्यका ॥

कन्या के गुण

अच्छी कुल में उत्पन्न हो, लज्जायुक्त हो, कोमलांगी, मृदुभाषिणी, गृहकार्य में कुशल हो, अंगहीन न हो और किसी महाव्याधि से युक्त न हों तो वह कन्या श्रेष्ठ कही है।

कन्या के दोष

बहुत बोलने वाली, काकस्वर वा घघर स्वर वाली हो जो कर्कशा कलह कारिणी हो जिसके ऊपर के होंठ पर रोम हों, अंगहीन, पिंगलावरण वाली, महाव्याधि से युक्त हो ऐसी कन्या को न विवाहे।

ऐसे दोनों पक्षों को चाहिये कि अच्छी प्रकार परीक्षा करके दोनों के ग्रह नक्षत्र मिलान करके शुभ लग्न में विवाह करना चाहिए। मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार विवाह संस्कार पर थोड़ा विचार लिखा है लिखने को तो और बहुत लिख देता परन्तु ग्रन्थ गौरव भय से यहीं समाप्त करता हूँ। यह बात भी मानी हुई है कि मनुष्य से त्रुटि रह जाती है इस कारण यदि त्रुटि रह गई हो तो पत्र द्वारा सूचित करें ताकि पंचम संस्करण में शुद्ध कर दी जावे।

नक्षत्र राशि ज्ञान चक्र

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरस	मृगशिरस	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	अा	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हू	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	व	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	श	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वि	०	का	ङ	हि	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वु		की	ठ	०	हे	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि	तुला			वृश्चिक			धन			मकर				कुंभ			मीन		
नक्षत्र	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू० षा०	उ. षा०	उ० षा०	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू० भा०	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	रू	ति	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दु	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सा	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	तो	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू.	०	दी	ञ	चि

नाड़ी कूट ज्ञान विचारः

वर और कन्या के नक्षत्रों से नाड़ी का ज्ञान जान कर यदि दोनों का नक्षत्र किसी भी एक नाड़ी में आ जाय तो नाड़ी दोष हो जाता है, नाड़ी दोष को सर्वथा त्याग देवे। ※नाड़ी चक्र※

अश्वि	आ	पुनः	उफा	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पूभा	आदि
भर	मृ	पुष्य	पूफा	चि.	ऽनु	पूषा	धनि	उभा	मध्य
कृत्ति	रो	ऽश्ले	मघा	स्वा	विशा	उषा	श्रव	रेव	अंतय

एषांपरिहार वाक्यानि

नवर्गवर्णो नगणो नयोनि द्विर्द्वादशे नैवषडष्टकेवा। ताराविरुद्धे नवपंचमेवा राशीश मैत्री शुभदा विवाहे॥ अर्थात् वर और कन्या की राशियों के स्वामी एक हों वा दोनों के स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर्णादि ७ कूटों का दोष नहीं रहता, इसी तरह नाड़ी दोष में यदि वर और कन्या का नक्षत्र भिन्न २ हो किन्तु राशि एक हो, अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न २ होय तो नाड़ी दोष नहीं होता यदि दोनों की एक ही राशि और एक ही नक्षत्र होय तो विवाह शुभ नहीं होता किन्तु नक्षत्र में भिन्न २ चरण होने से अत्यावश्यक में शुभ हो जाता है॥

योनि ज्ञान विचारः।

९ यदि वर और कन्या का नक्षत्र एक योनि में हो तो शुभ-मित्रयोनि में सम, और वैर योनि में हो तो शुभ नहीं होता (दैवज्ञ मनोहरे) अष्टाविंशति ताराणांयोनयस्तु चतुर्दश । महद्वैरेच स्वभावेवच यथा क्रमम् । मैत्रै चैवाति मैत्रे च खेंदु द्वित्रि चतुर्गुणाः ।

घोटक	हाथी	मेष	सर्प	श्वा	विडाल	गौ	योनयः
अश्वि शत.	भर. रेव	कृत्ति.पुष्य	रोहि. मृग	आर्द्रा मूला	पुनः अश्ले	पुष्य. उफा	नक्षत्राणि
महिष	सिंह	वानर	नकुल	मृग	मूषक	व्याघ्र	योनयः
हस्त स्वा	धनि.पूभा.	श्रव. पूषा	ऽभि. उषा	ऽनु.ज्येष्ठा	मघा पूफा	चित्रा विशा	नक्षत्राणि
वैरम्	वैरम्	वैरम्	वैरम्	वैरम्	वैरम्	वैरम्	वैरम्

वर और कन्या आपस में ६वें ८वें राशि में हों तो षडाष्टक, दूसरे और १२ वें हों तो द्विर्द्वादश ६वें और ५वें रशि में हो तो नवपंचम कहलाते हैं षडाष्टक में मृत्यु-तुल्य कष्ट द्विर्द्वादश में निर्धनता
 और नवपंचम में सन्तान सुख नहीं होता, षडष्टक द्विर्द्वादश और नवपंचम में राशियों के स्वामियों की मित्रता वा एकाधिपत्य होने से दोष नहीं होता शत्रुता होने में दोष कहा है।

मित्र षडष्टक ज्ञान चक्रम्

१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६

शत्रु षडष्टक ज्ञान चक्रम्

१	३	५	७	९	११
६	८	१०	१२	२	४

मित्र द्विर्द्वादश ज्ञान चक्रम्

१२	२	४	६	८	१०
१	३	५	७	९	११

शत्रु द्विर्द्वादश ज्ञान चक्रम्

१	३	५	७	९	११
२	४	६	८	१०	१२

मित्र नवपंचम ज्ञान चक्रम्

१	२	३	५	७	८
५	६	७	९	११	१२

शत्रु नवपंचम ज्ञान चक्रम्

९	१०	१२	११	६	४
१	२	४	३	१०	८

वरस्य पंचमे कन्या कन्यायां नवमेवरः एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्र सुखावहम् । मरण पितुमा-

त्रोश्च संग्राह्यं नवपंचकम् । षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत् ॥ वर की राशि से कन्या की राशि पंचम हो, कन्या की राशि से वर की नवम ९ हो तो यह त्रिकोण शुभ है । यदि विपरीत हो कन्या से ५ में वर, वर से ९ कन्या हो तो माता पिता की मृत्यु कहे, इसलिए राशि को विचार लें ।

गण कूट ज्ञान विचारः

वर और कन्या का नक्षत्र एक गण में हो तो उत्तम, देवता और मनुष्य गण में हो तो समानफल, देवता और राक्षस गण में हो तो कलह कारक होता है किन्तु वर राक्षस गण में और कन्या मनुष्य गण में हो तो किसी के मत में शुभ माना है कन्या राक्षस गण में और वर मनुष्य गण में होने से शुभ नहीं होता (दैवज्ञ मनोहरे) षट्गुणा गणसादृश्ये पंचस्युः सुर मानुषे । नार्यां देवो नरः पुंसश्चत्वारो वा गुणास्त्रयः । देव राक्षसयोः शून्यं तथैव नर राक्षसोः । पुंसोरक्षो-गणोयत्र नार्यां देवो ऽथवानरः । गुणो द्वौक्रमतश्चैकोगुणोग्राह्योऽन्यथानहि ।

❀ गणचक्रम् ❀

ऽश्वि.	मृग	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा.	ऽनु	श्रव	रेव	देवगण
भर.	रोहि	ऽऽर्द्रा.	पूफा	उफा	पूषा	उषा	पूभा	उभा	नरगण
कृति.	श्लेषा	मघा.	चित्रा	ज्येष्ठा	मूल	धनि	शत	विशा	राक्षसगण

पूज

वर और कन्या के राशियों के मित्रादि सम्बन्ध जान कर यदि दोनों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो उत्तम, मित्र सम हों तो मध्यम, परस्पर सम होने से अधम, परस्पर शत्रु हों तो कष्ट, और परस्पर मित्र
 शत्रु हों तो कलह कारक होते हैं, (दैवज्ञ मनोहरे) ग्रह मैत्रं सप्तविधं गुणाः पंच प्रकीर्तिताः। तत्रैकाधि पत्ये गुण पंचकं स्यात्, मिथो मित्रे च चत्वारः सम मित्रे त्रयोगुणा। समत्वे द्वौ गुणौप्रोक्ता वेकश्चसम वैरयोःशून्यं तूभयशत्रुत्वे गुणभेदाः क्रमादभीः।

ग्रह मैत्री चक्रम्

सू.	चं	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. वृ.	सू. बु.	सू. चं. वृ.	सू. शु.	सू. मं. चं.	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं. वृ. शु. श.	शु. श.	मं. वृ.	श.	मं. वृ. श.	वृ.	समाः
शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः
१	२	१०	६	४	१२	७	उच्चम्
७	८	४	१२	१०	६	१	नीचम्

* विवाहादि कर्मों में वर्जित वर्ष *

(विवहातंत्रे आद्ये चतुर्थे वसुषोडशेच । एकोनविंशेद्वाविंशताच । मागल्यचौरंचविवाहकर्म- १३ १३ कर्मोदितंयस्ययमेनतुल्यम् ॥

* पहिले गर्भ में जन्म मासादिकों का निषेध *

(नारदः) नजन्ममासे जन्मर्क्षेन जन्मदिवसेऽपिवा । आद्यगर्भ सुतस्याथदुहितुर्वाकरग्रहः । जन्म दिन से लेकर ३० दिन जन्ममास कहलाता है। जन्ममासतिथि और जन्मनक्षत्र में पहलेगर्भ के पुत्र वा कन्या का विवाह न करे। अत्यावश्यक में विवाह करना हो तो वसिष्ठ जी के मत से जन्म दिन छोड़ दे, अत्रि जी के मत से ३ दिन छोड़ कर जन्ममास में विवाह कर लेवे, गर्ग जी के मत से ५ दिन छोड़े और भागुरि जी के मत से जन्म मास में पक्षभर छोड़ कर विवाह कर लेवे (जगन्मोहने) जातदिनंदूषयतेवसिष्ठः वंचैवगर्गास्त्रि दिनंतथात्रिः। तज्जन्मपक्षंकिलभागुरिश्चव्रते विवाहे गमनेक्षुरेच।

* ज्येष्ठ के महीने में विवाह का विचार *

जहां पर लड़का जेठा हो, कन्या भी जेठी हो और जेठ का महीना हो इस को तीन जेठ कहते हैं यह तीन जेठ विवाह में सर्वथा वर्जित कहे हैं और जहां पर जेठा लड़का और जेठ का महीना, अथवा जेठी लड़की और जेठ का महीना हो इस को दो जेठ कहते हैं, यह दो जेठ विवाह में मध्यम कहे हैं, और जहां लड़का और लड़की जेठे न हों केवल जेठ का महीना हो—यह एक जेठ विवाह में उत्तम कहा है, इसी तरह लड़का और लड़की जेठी हों किन्तु जेठ का महीना न हो इन दोनों का विवाह भी न

करे (वराह:) द्वौजेष्टौ मध्यमौप्रोक्तावेकोज्येष्ट;शुभावह; । ज्येष्टत्रयंनकुर्वीत् विवाहे सवसम्मतम् ॥ (गर्ग;) ज्येष्टाया कन्यकायाश्चज्येष्ट पुत्रस्य वैमिथ; । विवाहोनैवकर्तव्योयदिस्यान्निधनंतयो; । जब तक
१४ कृतिका नक्षत्र में सूर्य रहे तब तक ज्येष्ट महीने का निषेध होता है । (भारद्वाज;) कृतिकास्थंरवित्यक्त वाज्येष्टे ज्येष्टस्यकारयेत् । विवाहादीनिकार्याणिदिनानिदशवजयेत् ॥

ज्येष्ट के महीने की तरह मार्गशीर्ष महीने में भी आद्य गर्भ का विवाह न करे (भारद्वाज;) मार्ग शीर्ष तथाज्येष्टे क्षौरं व्रतम् । आद्यपुत्रदुहित्रोश्चयत्नत:परिवर्जयेत् ॥

विवाह में विशेष विषयों पर विचार

पुत्र के बिवाह से पीछे अपनी कन्या या अपने कुल की कन्या का बिवाह ६ महीने तक न करे, अर्थात् लड़की के विवाह से पीछे लड़के का विवाह हो सकता है, इसी तरह विवाह से पीछे मुंडन व यज्ञोपवीत ६ महीने तक न करे, (नारद:) पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रि विवाहनऋतुत्रये । कुर्यान्नव्रतमुद्वाहान्मगले नाप्यमंगलम् ।

दो सगे भाईओं का विवाह दो सगी बहिनों से न करे, (नारद:) नचैकजन्मनो: पुंसोरेकजन्मे तुकन्यके । नूनंकदाचिदुद्वाह्यो नैकदामु डनद्वयम् ॥ तथा एक वर के साथ दो सगी बहिनों का विवाह न करे (वसिष्ट:) न पुत्रीद्वयमेकस्मै प्रदद्यात्त कदाचन् ॥ जिस वर को कन्या दे; उसकी बहिन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (नारद:) प्रत्युदाहोने नैवकार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम, दो सगे भाईयों का विवाह ६ महीने के भीतर न करे (वसिष्ठ:) [illegible] षण्मासाभ्यंतरेयदि । असं

शयंत्रिभिर्वर्षैतत्रैकाविधवाभवेत् ॥ दो सगे भाईयों का, वा भाई बहनों का अथवा दो सगी बहनों का
१५ एक संस्कार ६ महीने में न करे, (बृद्धमनु) एकमातृ जयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियोः नसमान क्रियां कुर्यान्मा-
तृभेदेविधीयते ॥ भिन्न माता के उदर से उत्पन्नहुवे २ अथवा यमलभाई वा बहनों का एक संस्कार द्वारा
भेद, मंडपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है, इसी तरह मंगल कर्म से पीछे ६ महीने तक पितृकर्म
न करे, अथवा वर्ष भेद के हो जाने से ६ महीने के भीतर भी हो सकता है, जैसे माघ फागुन में विवाह
किया हो तो वैशाख में मुंडन वा यज्ञोपवीत करने से दोष नहीं होता, बड़े मंगल कर्म से पीछे लघु-
मंगल कर्म न करे यह ६ महीने का निषेधतीनपीढ़ी के पुरुषों के लिए ही कहा है, चौथी पीढ़ी के पुरुष
को दोष नहीं होता ।

अथ वाग्दानम्

वर निर्विघ्नार्थ तथा मङ्गल कामना के लिये संकल्प पूर्वक प्रथम गणपत्यादि देवों का पूजन करे तदनन्तर शुभ मुहूर्त में वर के घर पर गया कन्या का भाई पुरोहित वा अन्य कोई योग्य ब्राह्मण उत्तर वा पश्चिम को मुख किये बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केसर चन्दनादि से तिलक द्वारा पूजन करके और वर के मुख में एक छुहारे का फल वा पतासा देकर स्वयं पूगीफल, यज्ञोपवीत, पात्र, वस्त्र तथा यथोचित द्रव्य हाथ में लेकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर वर को देवे ।

मन्त्र :—तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नोतह्य रोगिणि ।
अभ्यङ्गेऽपतिते ऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति ॥

कन्या दान दिने दाता का नियम

१६ कन्या दान के दिन दाता उपवास करे यदि उपवास करने के असमर्थ हो तो वह जल, मूल, फल, दूध आदि का उपयोग कर सकता है क्योंकि (स्कन्द) में लिखा है कि जल, मूल, फल, दूध ब्राह्मण की आज्ञा, हवि तथा बृद्धों का वचन और ओषधि यह आठ वस्तुएँ व्रत को नाश नहीं करतीं अर्थात् असमर्थ पुरुष इनके सेवन से व्रत हीन नहीं होता ॥ अष्टैतान्यव्रतघ्नानि ह्यापोमूलं फलं पयः । हविर्ब्राह्मण काम्यया गुरुवचनमौषधम् । अनुकल्पो नृणां प्रोक्तः क्षीणानां वर वर्णिणानी ॥ उपवास के दिन दन्त धावन न करे ॥ दान व्रत का नियम मदन रत्नाकर ने ऐसे लिखा है ।

'दान व्रतानि नियमाः ज्ञानं ध्यानं हुतं तप । यत्नेनापि कृतं सर्व क्रोधितस्य वृथा भवेत् ॥

अर्थात् दान, व्रत, नियम, ज्ञान, ध्यान यज्ञ और तप ये सब बड़े परिश्रम से किये हुए क्रुद्ध हो जाने पर निष्फल हो जाते हैं ।

रामशरण दास ज्योतिषाचार्य
पंचांग दिवाकर कर्ता
जालन्धर नगर

* अथ विवाह सामग्री *

केले के थम्भ ४ या डांगां ४ (वेदी)
गोटा सफेद
माष काले, जंदरा
नारियल १
आटा, पुष्प, मौली
चंदन
सेहरे, पुष्प
सुपारियां
धोती, तौलिया
घी हवन के लिए
छायापात्र के लिए दो कटोरे कांसी के
शिला
स्रुवा
डोने
छाज
केसर
परने चार

कपड़ा सुर्ख २ गज़
मूढ़े २
घड़ा
आम के पत्ते
पंचरंग, रौली
चावल
धूप, दीपक, रूई, पान
दूर्वा, कुशा, विष्टर
दही, शहद, घी
गाय का गोबर
प्रोक्षणी प्रणीता के लिए २ कटोरे
शंखी १
अँगूठी स्वर्ण की
गंगा जल
समिधा
कुजे ४
फुलियां, धाईं

विवाह मंडल

विवाहादौ लिखेन्नित्यं तिलकंनाममण्डलम् । द्वादशांगु लमध्यस्थं वर्त लाष्टदलं रविम् ।। चतुर्विंशतिराग्नेय्यां चंद्रमर्द्ध लिखेसथा ।। त्रिकूटं भूसुतं चैव दक्षिणे चतुरङ्गु लम् धनुराकरं नवांगुल्यमिशाने च बुधं तथा । उत्तरे च गुरु स्थाप्यः पदमाकारो नवांगुलः ।। पूर्वे संस्थाप्येच्छुक्रं चतुष्कोणं नवांगुलम् । स्थाप्यः पद्माकारो नवांगुलः ।। पूर्वे संस्थाप्येच्छुक्रं चतुष्कोणं नवांगुलम् । खङ्गाकृतिं नवांगुल्यं प्रतीच्यां शनिमेव च ।। राहु संस्थाप्य नैर्ऋत्यां मत्स्याकारंनवांगुलम् । केतु दीर्घ यथा राहुँ वायव्यां दिशि संस्थितम् ।।

स्वास्वः दिक्षु ग्रहाः स्थाप्याः संख्यारेखा भवेद्ध्रुवम् ।। भास्करांगारकौ रक्तौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ ।। सोमपुत्रो गुरुश्चैव उभौतापीतकौस्मृतौ । कृष्णवर्णो भवेत्सौरी राहुकेतू च धूम्रकौ ।। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च उत्तरे च तथोऽनलः । इन्द्रो वायु भर्वे त्पूर्वे सर्पः कालश्चदक्षिणे । ऐशान्यां कलशं स्थाप्य ओंकारादींश्चसर्वशः । मातरश्चोत्तरे स्थाप्या आग्नेय्यां योगिनीर्न्यसेत कनिष्ठिका प्रमाणेन रेखाः कार्य्याः प्रयत्नतः ।। स्थूलाः सूक्ष्मा न कर्तव्यायदीच्छेच्छुभमात्मनः ।

॥ श्री ॥

विवाह पद्धति

(भाषाटीका सहित)

श्री गणेशायनम:

**प्रणम्य लम्बोदर पार्वतीशम विमुक्तिहेतु गुरुं पादपद्मम्।
प्रदर्शयेयं मतमार्षमेव विवाहकाले हतवादिवादम्॥ १॥**

श्री गणेश और सरस्वती को प्रणाम करके और गुरु जी के कमल चरणों से ज्ञान प्राप्त करके मैं राम शरण शर्मा लोक हितार्थ के लिए शास्त्रों के सार से इस विवाह पद्धति को बनाता हूँ।

वर पूर्व को मुख करके आसन पर बैठे और पण्डित जी नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर दूबी से गंगाजल का छींटा लगावे।

। अथ मन्त्रः ॥

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

पुरोहित नीचे लिखे मन्त्र से वर के आसन पर चावल छोड़े।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।

✱ यहां शंका होती है कि अन्य दानों में दाता पूर्वाभिमुख वैठकर दान देता है परन्तु कन्यादान में किस प्रमाण से दाता उत्तर मुख और वर पूर्वाभिमुख वैठे। इसके लिये संस्कार भास्कर में लिखा है सर्वत्र प्राङ मुखो दाता प्रति ग्राही उदङ् मुखः। एवं एव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्ययः॥

व्यास स्मृतौ-(प्रत्यङ् मुखं स्थापयेत, देवं पूज्यं वर विना॥ वरस्तु प्राङ् मुखः पूजकः स्यादुद् मुखः'')

॥ अथ श्री गुरुध्यानम् ॥

ओ३म् अज्ञानतिमिरान्धस्य-ज्ञान ञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परंब्रह्म-तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवेनमः ॥३॥

पण्डित सब मनुष्यों के हाथ मैं चावल दे और फिर मन्त्र पढ़े।

हरिःओं, स्वस्ति नःइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वास्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु। पयः पृथिव्यां पयओषधिषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिश ÷ सन्तु मह्यम् ॥ विष्णो रराटमसि

विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवो देवता रुद्रादेवता आदित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता, द्यौःशान्तिरन्तरिक्षँ शांतिः ÷ पृथिवीशांतिरापःशांतिरोषधयः शांति ÷ वनस्पतयःशान्तिविश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शांतिःसर्वँ शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि,सु शांतिर्भवतु ओं विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रन्तन्न आसुव, इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीःयथाशाम सद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्

एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेनमामव, मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमि तनो त्त्वरिष्टं यज्ञँ समिमं दधातु विश्वेदेवा सइह माद यन्तामों प्रतिष्ठ। एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥९॥ ओं सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तुदेवाः ॥१०॥

ओं गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे। निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वा मजासिगर्भधम् ॥ ११ ॥ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवोनमोनमो, व्रातेभ्योव्रातपति

भ्यश्चवो नमो नमो, गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्चवो नमोनमः॥ १२॥ ओं समुखश्चैक-दन्तश्चकपिलोगजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रोगजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते। अथातः संप्रवक्ष्यामि गणयोगे सुखावहम। कामुके वासवे यज्ञोविवाहेब्रत संयमे ॥ श्री गणपतये नमः ॥

यहां गुड़ को एक रोली पर मौली लपेट कर गणपति पर रक्खे।

कन्या का पिता अर्घे में जल लेकर संकल्प करें।

ओं तत्सदद्ये त्याद्युक्त्वा अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा श्रुत्याद्युक्त फलावाप्ति कामो ऽवगतानवगतानेक जन्माधिकरणकाय वाङ्मानस कृतकोटिशः पाप महा पापोप पापशमन पूर्वक श्री यज्ञपुरुष नारायण प्रीतये कन्यादान नैमित्तकशान्तिकर्माहं करिष्ये तन्निर्विघ्नपरि समाप्ति कामो यथालब्धोपचारैं गणपत्यादीनहं पूजयिष्ये

वर अर्घे में जल लेकर संकल्प करें।

ओंतत्सदद्येत्याद्युक्त्वाअमुकगोत्रोअमुकशर्माश्रीलक्ष्मी नारायणप्रसादकरणकंयावज्जीवपत्न्यासहायुरारोग्य सम्प-त्ति समृद्धि पूर्वकं परमसुख प्राप्तये धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थ

२६ सत्संस्कारस्वकीयोद्विवाहकर्मांगमहंकरिष्ये। तन्निर्विघ्न परि-
समाप्तिकामो गणपत्यादीन्यथा लब्धोपचारैरर्च्चयिष्ये।

॥ अथ गणपति पूजनम् ॥

ओं भूर्भुवः स्वः भगवन् गणपति दैवतइहागच्छइहातिष्ठ सुप्रतिष्ठो वरदो भव ममपूजां गृहाण। पाद्यम् अर्घ्यं आचमनीयम् स्नानम् समर्पयामि, मांगल्यसूत्रंसमर्पयामि गन्धम्समर्पयामि, अक्षतान् समर्पयामि, पुष्पम् सम० धूपं आघ्राह्यम् दीपंसम० नैवेद्यम् नैवेद्यान्तर पुनराचमनीयम् पूगीफलं स० इमां दक्षिणाञ्च समर्पयामि। भगवन् गणपते पाद्यादिभिः सुपूजितः प्रसन्नोभव।

फिर हाथ जोड़ कर नमस्कार करे

ॐ वक्रतुण्डमहाकाय सूर्य कोटि समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा । इति नमस्कुर्यात् ॥

अथ ओंकार पूजनम्

ॐ आवाहयाम्यहंदेवमोङ्कारं । परमेश्वरं । त्रिमात्रं त्र्यक्षरं दिव्यं त्रिपदं च त्रिदैवकम् ॥ त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयंशुभम् । त्र्यर्णवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम् ॥ अनादि निधनंदेवमप्रमेयं सनातनम् । परं परतरं बीजं निर्मलं निष्कलं शुभम् ॥

ॐ आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः

शूरइषव्योति व्याधी महारथो जायातान्दोगध्री धेनुर्वो-
ढान ड्वानाशः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयो
युवास्ययजमानस्य वीरोजायताग्निकामे निकामनः पर्ज्ज-
न्नयो वर्षतु फलवत्त्यो न औषधयः पच्यंतां योग क्षेमो
नं÷ कल्पताम् ।

ओं भूर्भुवःस्वः इत्यादिना ओंकारमावाह्य ॥ ओंकारं
विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव
ओंकारायनमो नमः ॥ इति नमस्कुर्यात् ॥

रक्षा-बन्धनम्

ॐ मानः शँ सोऽअररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो

ब्रह्मणस्पते ॥ १ ॥ यदा वध्नन् दाक्षायणा हिरण्यँ शतानीकाय सुमनस्य मानाः । तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माँजरदष्टिर्यथासम् ॥ २ ॥ इति पठन् यजमान दक्षिणकरमूले कङ्कणं बध्नीयात् ।

॥ अथ मातृ पूजनम् ॥

ॐ गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देव, सेना, स्वधा, स्वाहा, मातरो लोकमातरः हृष्टिः, पुष्टिस्तथा तुष्टिस्तथात्मनः कुलदेवता, श्री कलदेव्यन्तर्गत गौर्य्यादिषो ड़श मातृभ्यो नमः ।

॥ कलश पूजनम् ॥

ओं ऋग्वेदाय नमः, यजुर्वेदाय नमः सामवेदाय नमः

अथर्ववेदाय नमः, कलशायनमः, रुद्राय नमः, वरुणाय नमः समुद्राय नमः, गङ्गायै नमः यमुनायै नमः सरस्वत्यै नमः कलशकुम्भाय नमः॥ ओं वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदनमासीद् ॥ ब्रह्मणा निर्मितस्त्वं हि मंत्रैरेवामृतोद्भवैः ॥ प्रार्थयामि च कुम्भ त्वां वांछितार्थन्तु देहि मे ॥ नमस्कार करो।

वास्तु पूजनम्

अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तुपूजनम्। येन पूजा विधानेन कर्म सिद्धिस्तु जायते॥ अनन्तं पुण्डरीकाक्षं

फणाशत विभूषितम् । विद्युद्वन्धूकसाकारं कूर्मारूढ़
प्रपूजयेत् ॥

॥ नस्कारम् ॥

ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च न पृथिवी मनुाये
अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः मर्पेभ्यो, नमः वासुक्याद्यष्ट कुल
नागेभ्यो नमः ॥

॥ अथ योगिनी पूजा ॥

ओं आवाहयाम्यहं देवीं योगिनी परमेश्वरीम् योगाभ्या
सेन संतुष्टा पर ध्यान समन्विता ॥ १ ॥ दिव्य कुण्डल
संकाशा दिव्य ज्वाला त्रिलोचना, मूर्तिमतिह्य मूर्ता च
उग्रा चैवोग्र रूपिणी ॥२॥ अनेक भाव संयुक्ता मंसारार्णव

डाकिनी काली कालरात्रो निशाचरी ॥४॥ हुंकारी सिद्ध
वेतालो खर्परी भूत गामिनी, ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कां
गी मांस भक्षिणी ॥ ५ ॥ फूत्कारी वीर भद्राक्षी धूम्राक्षी
कलह प्रिया रक्ता च घोररक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी॥६॥
चौरिका मारिका चण्डी वाराही मुण्डधारिणी भैरवी
चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी ॥७॥ कालाक्षी
मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी । कुण्डला तालकौमारी
यमदूती करालिनी ॥८॥ कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी
तारिणी, यज्ञं कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥३॥
दिव्य योगी महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी, प्रेताशी

यंत्रवाहिनी, ।९॥ दुर्घटे विकटे घोरे कपाले विष लंघने
चतुः षष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वर प्रदाः ॥ १० ॥
त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं देवमानुष्ययोगिभिः ॥११॥

॥ अथ ब्रह्मा पूजनम् ॥

ओं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सुबुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः

॥ अथ विष्णु पूजनम् ॥

ओं विष्णोरराट्मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विशणवेत्वा ॥

॥ अथ शिव पूजनम् ॥

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च

मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवेतराय च ॥

॥ अथ लक्ष्मी पूजनम् ॥

ओं श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुमम्ऽइषाण सर्व्वं लोकम्मऽइषाण ॥ श्री लक्ष्म्यै नम : ॥

॥ त्र्यबकं पूजन ॥

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमुर्क्षीय माऽमृतात् ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥

ओं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यं-ञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्

ओं सूर्याय नमः॥

॥ अथ चन्द्र पूजा ॥

३५ ॐ इमन्देवा असपत्नँ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥ इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोस्माकम् ब्राह्मणानाँ राजा ॐ सोमाय नमः॥

॥ अथ भौम पूजा ॥

ओं अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाँ रेताँ सिजिन्वति। ओं भौमाय नमः॥

॥ अथ बुध पूजा ॥

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजे

थामयञ्च । अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरास्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत । ओं बुधाय नमः ॥

॥ अथ गुरु पूजा ॥

ओं बृहस्पतेऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्यु मद्विमाति क्रतु मज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजाततदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ओं बृहस्पतये नमः

॥ अथ शुक्र पूजा ॥

ओं अन्नात्परिस्रु तो रसंब्रह्मणाव्यपिवत्त्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रियस्येन्द्रियमिदंपयोमृतम्मधु ओं शुक्राय नमः ॥

३७

॥ अथ शनि पूजा ॥

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः। ओं शनैश्चराय नमः॥

॥ अथ राहु पूजा ॥

ओं कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कयाश चिष्ठया वृता। ओं राहवे नमः॥

॥ अथ केतु पूजा ॥

ओं केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः॥ ओं केतवे नमः॥

ओं ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवःसर्वेग्रहाः शान्तिकरा

भवन्तु ॥

जल लेकर विनियोग करें ।

उों साधु भवानास्तामिति प्रजापति ऋषि ब्रह्मादेवता यजुश्छन्दो वरार्चने विनियोगः ।

कन्या का पिता वर के दाहिने घुटने पर अपना सीधा हाथ धर कर निचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करे ।

ओं साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम् । इतिब्रूयात् ।

आप सावधान होकर (सुखसे) बैठें हम आपका पूजन करते हैं ।

वर कहे **उों अर्चय ।** पूजन कीजिए

पुरोहित कहे * **ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः**

यहां प्रश्न होता है कि बड़ा छोटे की पूजा कैसे कर सकता है, सो गृह्यसूत्र कण्डिका ३ सू १ में लिखा है—षडघर्या भवन्त्याचार्य ऋत्विग् वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति । अर्थात् १. गुरु, २. यज्ञ करवाने वाला ३. वर, ४. राजा ५. उत्तम मित्र, ६. वेद पढ़ा हुआ ब्रह्मचारी यह पूजा के योग्य लिखे हैं ।

* पचीस कुशाओं की वेणी बनाकर आगे गांठ लगाना यह विष्टर है ।

(कन्या का पिता कहे) **ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम्** । आप विष्टर ग्रहण कीजिये ।

(वर कहे) **ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि** । मैं विष्टर ग्रहण करता हूं ।

जल लेकर विनियोग करे ।

ओं वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वण ऋषि विष्टरो देवताऽनुष्टुपुछन्दः उपवेशने विनियोगः ।

वर उत्तराग्र विष्टर को दोनों हाथों से पकड़े और आसन पर रखकर नीचे मन्त्र से इस पर बैठे ।

ओं वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः इमं तमभि-तिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति ।

ऐसा कहकर वर उत्ताग्र विष्टर पर बैठे । अर्थ, मैं अपनी जाति वालोंमें से सब से श्रेष्ठ हूं जैसे सूर्य उदय होने वाले ग्रहनक्षत्र आदियों में श्रेष्ठ हैं जो कोई मनुष्य मेरा अपमान करना चाहे मैं उस पुरुष को विष्टर की भांति बांधकर पांवों तले कुचल दूंगा ।

पण्डित कहे) **ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यम्** ।

(कन्या का पिता कहे) **ओं पाद्यं प्रतिगृह्यताम्** । पाद्य ग्रहण कीजिये ।

(वर कहे) **ओं पाद्यं प्रतिगृह्णामि ।** मैं पाद्य ग्रहण करता हूँ ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से वर यदि ब्राह्मण हो तो पहिले दाहिना पांव यदि क्षत्रिय हो तो पहिले वाम पांव धोवे । जैसे हरिहर भाष्य में लिखा है । ❀

ओं विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्याय विराजो दोहः ॥

हे जल ! आप जगत के सार हैं मैं उस संसार के सार आप को ग्रहण करता हूँ हे जगत के सार आप मेरे चरणों के धोने योग्य बनें ।

फिर और जल लेकर पण्डित पढ़े ।

ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ।

(कन्या का पिता कहे) **ओं पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ।**

❀ यजमानार्पित पाद्योदकमादाय वाम चरणं प्रक्षाल्येतर प्रक्षालयति क्षत्रियादिरर्घ्यः, यदि ब्राह्मणो ऽर्घ्यस्तदा दक्षिणं प्रक्षाल्येतरं प्रक्षालयति इति हरिहर भाष्यम् ।

(वर कहे) उँ पाद्यं प्रतिगृह्णामि ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से वाम अथवा दक्षिण पैर को धोवे।

ओं विराजोदोहोसि विराजोदोहमशीय मयि पाद्याय विराजो दोहः ।

फिर दूसरा विष्टर लेकर पण्डित पढ़े ।

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः ।

(कन्या का पिता कहे) ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ।

(वर कहे) ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि ।

वर विष्टर को लेकर उत्तराग्र करके पांव के नीचे रखे और नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

ओं वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः इमं तमभितिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति ।

जल लेकर विनियोग करें ।

ओं अर्घ इत्यादेर्विष्णु ऋषि स्त्रिष्टुप छन्दो विष्णुदेवता अर्घदाने विनियोगः ॥

फिर दाता दूर्वा, अक्षत, गन्ध, पुष्प, जल से मिले हुए अर्घ पात्र को ले ।

(पण्डित पढ़े) **ओं अर्घो ऽर्घो ऽर्घः ।**

(कन्या का पिता कहे) **ओं अर्घः प्रतिगृह्यताम् ।** (अर्घ ग्रहण कीजिए ।

(वर पढ़े) **ओं अर्घं प्रतिगृह्णामि ।** मैं अर्घ ग्रहण करता हूँ ।

फिर वर ऽर्घ लेकर उस में से अक्षतादि को नीचे लिखे मन्त्र से शिर पर धारण करे ।

ओं आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि ।

हे जलो ! आप सर्वत्र [illegible] वाले हैं, मैं आप के द्वारा सब कामनाओं को प्राप्त करूँ ।

जल लेकर विनियोग करें।

ओं समुद्रं व इत्यादि मंत्र त्रयस्याथर्वरण ऋषि बृंहती च्छंदोवरुणो देवता ऽर्ध जलप्रवाहे विनियोगः॥

शेष जल को नीचे लिखे मन्त्र से ईशान कोण में छोड़ दें।

ओं समुद्रंवः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरामा परासेचिमत्पयः॥ इत्यर्घपात्रस्थ जलमैशान्यां त्यजन्पठेत्॥

हे जलो! तुम्हें समुद्र को पहुंचाता हूँ इस लिए आप अपने कारण समुद्र की ओर जाओ, हमारे वीर उपद्रव रहित होवे, मेरे घर में सर्वदा शुभकार्य होते रहें जिससे मंगल जल मुझ से पृथक न हो॥

शुद्ध पात्र में पवित्र जल लेकर पण्डित कहे।

ओं आचमनीयं आचमनीयं आचमनीयम्

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्। कन्या का पिता पढ़े आचमन कीजिए।

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्णामि । वर पढ़े

मैं आचमन के जल को ग्रहण करता हूँ । यह कह कर कन्या के पिता के हाथ से आचमन ग्रहण करे ।

जल लेकर विनियोग करें ।

ओं आमागन्तिति परमेष्ठी ऋषि र्बृहतीच्छन्दः आपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नोट—नीचे लिखे मन्त्र से एक बार आचमन करे दो बार चुप बिना मन्त्र के आचमन करे ।

ओं आमागन्यशसा सँ सृज वर्चसा । तंमा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम् ॥ इत्यनेन सकृदाचामेत । द्विस्तूष्णीम्

हे वरुणदेव मुझे यश वाला तथा तेजस्वी बनाओ । अपनी सन्तान तथा अन्य लोगों का प्यार बनाओ गौ हाथी घोड़े आदि पशुओं का स्वामी तथा प्राणियों को सुख देने वाला बनाओ ।

फिर कांसी के पात्र में दधि, मधु, घृत कांस्य पात्र से ढके हुए लावे

ओं मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः पण्डित पढ़े

ओं मधुपर्क प्रतिगृह्यताम् कन्या का पिता पढ़े (मधुपर्क लीजिये)

ओं मधुपर्क प्रतिगृह्णामि । वर पढ़े

मैं मधुपर्क को ग्रहण करता हूँ यहां वर केवल ऊपर से वर्तन को उठावे। जिस से मधुपर्क ढ़का हुआ है और नीचे लिखे मन्त्र से उसको देखे।

नोट :—मधुपर्क की विधि : एक हिस्सा घृत २ हिस्से दधि और एक हिस्सा मधु मिला कर मधुपर्क बनावे।

दधि मधु और घृत यह तीनों वस्तुए पवित्र हैं और अनेक रोगों को नाश करने वाली हैं इन पवित्र वस्तुओं के भक्षण करने से अशुभ विचार वा भाव दूर होते हैं, शरीर में पवित्रता आती है। शुद्ध पवित्र मनुष्य को दान देना और लेना शास्त्रों में लिखा है तींन वार भक्षण करने से मन वाणी तथा शरीर इन तीनों में पवित्रता आती है।

जल लेकर विनियोग करें।

ओं मित्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्क दर्शने विनियोगः।

ओं मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षे।

हे मधुपर्क मैं तुझे मित्र अथवा सूर्य्यदेव के नेत्रों से देखता हूँ।

जल लेकर विनियोग करें।

ओं मधुपर्क निरीक्ष्य देवस्य त्वेति ब्रह्मात्रृषिर्गायत्रो चछन्दः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः।

नीचे लिखे मन्त्र से मधुपर्क को लेकर वाम हाथ वर वर रखे।

ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।

हे मधुपर्क मैं अश्विनी कुमारों की भुजाओं से और पूषा के हाथों से तुझे ग्रहण करता हूँ।

जल लेकर विनियोग करें।

ओं नमःश्यावेति प्रजापति ऋषि गायत्री छन्दः सविता देवता मधुपर्का लोडने विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से तीन बार दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से हिलाकर अनामिका

और अंगुष्ठा से पृथ्वी पर गिरावे ऐसे तीन वार करे। और मन्त्र भी तीन बार पढ़ना चाहिये ऐसा योगी याज्ञवल्क्य और भाष्यकार का कथन हैं।

ओं नमःश्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धंतत्ते-निष्क्रन्तामि ॥

हे कपिशमुख। [भूरे रंग वाले] तुमको मैं नमस्कार करता हूँ और तेरे में जो अविद्ध द्रव्य मिलते हैं वह पदार्थ मैं पात्र से बाहिर फैंकता हूं॥

फिर मधुपर्क कन्या को देखने के लिये देवे।

जल लेकर विनियोग करें।

ओं यन्मधुनइत्यस्य कोत्सऋषि जातोछन्दः मधुपर्को देवता मधुपर्क प्राशने विनियोगः।

नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार पढ़ कर तीन बार मधुपर्क खावे।

ओं यनमधनो मधव्यं परमँ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्यो-

ऽन्नादोसानीति ॥

मैं सर्वगुणों से श्रेष्ठ मधुपर्क के तुल्य अन्नादि के भोगने वाला होऊं।

तत आचम्य । [फिर तीन बार आचमन करे]

फिर नीचे लिखे मन्त्रों से अंगों को स्पर्श करे।

ओं वाङ्ग मे आस्येऽस्तु ॥ [मेरे मुख में वाणी देवता रहे]

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ [मेरी नासिकाओं में प्राण रहें]

ओं अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु ॥ [मेरे नेत्रों में दृष्टि बनी रहे]

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ [मेरे कानों में सदा सुनाई देवे]

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ [मेरी दोनों भुजाओं में बल रहे]

ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ [मेरे उरुस्थल में सामर्थ्य हो]

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु ॥

मेरे शरीर के समग्र अङ्ग नीरोग रहें ।

यदि गौ देने की सामर्थ्य न हो अथवा किसी कारण वहां गौ उपस्थित न हो सके तो यजमान वर के आगे उत्तराग्र कुशा बिछा कर यथा शक्ति वर को धन देकर नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

ओं गौ गौ गौरिति । [कन्या का पिता पढ़े]

जल लेकर विनियोग करे ।

ओं माता रुद्राणामिति मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि स्त्रिष्टुपछन्दः गौरिर्देवताभिमन्त्रणे विनियोगः ।

आजकल प्रायः गौ उपस्थित न होने के कारण दाता कन्या को पकड़ कर वर के हाथ में देता है और साथ दक्षिणा दोनों लेकर वर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़े ।

ओं मातारुद्राणां दुहिता वसूनाँ स्वसादित्यानाम-मृतस्यनाभिः । प्रनुवोचंचिकितुषे जनायमागामनागाम

दितिर्वधिष्ट ॥ मम [लड़के का नाम] चामुष्य चामुक [कन्या के पिता का नाम] शर्म्मणो यजमानस्योभयोः पाप्माहतः ॥ ओं उत्सृजत तृणान्यत्तु इति तृणंछिन्द्यात् ॥

यह गौ रुद्रों की माता है, वसुओं की कन्या है, आदित्यों की भगिनी है और अमृत युक्त है इस कारण मैं आप ज्ञानवान से कहता हूँ कि तुम यह मुझे दो। मुझ वर का, और अमुकनाम कन्या पिता [यजमान] का गौ के दर्शन से पाप नष्ट हुआ।

ततो वेदिकायां तुषकेश शर्करादि रहितायां हस्त मात्र परिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशैःपरिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फयेन स्रुवेण वा प्रागग्र प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण

त्रिरुल्लिख्योल्लेखन क्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य जलेनाऽभ्युक्ष्य ॥

गोदान के उपरान्त तुष केश आदि अपद्रव्यों से रहित वेदी में चारों तरफ हाथ २ भूमि मापे उसमें शुद्ध रेत की स्थण्डिल बनावे और कुशा से साफ करके कुशा को ईशान कोण में फैंक देवे ऊपर गोबरादि से लेपन करे, फिर स्फय से अथवा स्रुवे से पूर्वाग्र पश्चिम से पूर्व की ओर तथा दक्षिण से उत्तर की ओर तीन रेखा करे, फिर अंगुष्ठ और अनामिका से तीन वार मृत्तिका निकाल कर बाहिर फैंके और फिर शुद्ध जल से अभ्युक्षण करे।

तत्र तूष्णीं कांस्य पात्रस्थवन्हि मादाय प्रत्यङ्मुखं समाधाय तद्रक्षणार्थं किञ्चिन्नियुज्य कौतुकागाराद्वरः कन्यामानीय मण्डपे कन्या द्वै मातुरोङ्कार लक्ष्मी कुवेरानर्चयेत् ॥

कांस्य पात्र में स्थित दूसरे कांस्यपात्र से अग्नि को ढक कर स्थापन करने वाला पूर्व की ओर मुख कर अग्नि को चुपचाप स्थापन करे फिर लड़की को कौतुकागार से लावे और

लड़का खड़ा होवे फिर दोनों बैठ जावें। और लड़की से गणपत्यादि पूजन करावें।

ततो यजमानोवराय वस्त्र चतुष्टयं प्रयच्छति, तेषु वरो वस्त्र द्वयं कन्यायै ददाति वस्त्र द्वयञ्च स्वयं परिधत्ते॥

लड़की से पूजन के उपरान्त यजमान वर को चार वस्त्र दे उनमें से वर दो वस्त्र कन्या को देवे और दो स्वयं धारण करे।

जल लेकर विनीयोग करे।

ॐ जरांगच्छेति मंत्रस्य प्रजापतिऋषि स्त्रिष्टुपछन्दः तन्तवो देवता वस्त्रपरिधाने विनियोगः

ओं जराङ्गच्छ परिधत्स्ववासो भवाकृष्टीनामभिश-स्तिपावा। शतञ्च जीवशरदः सवर्च्चा रयिञ्च पुत्रा-ननुसंव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदँ परिधत्स्ववासः॥ इति

पठित्वा परिधान वस्त्रं तस्यै ददाति वरः ॥

हे कन्या ! तू मेरे साथ वृद्ध-अवस्था को प्राप्त हो और मुझ से दिये वस्त्र को पहिन। मेरे घर में कलह कारिणी मत हो और सौ वर्ष जीती हुई तेज वाली होकर धन और पुत्रों से युक्त हो और तू वस्त्रों से रहित मत हो।

इस मन्त्र से वर कन्या को वस्त्र देवे।

ओं या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवी-स्तन्तूनभितोततन्थ । तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वा-ऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इति पठित्वा-उत्तरीयं ददाति वरः ॥

जिन देवियों ने इस वस्त्र को काता है और तना है वह तुझे निरन्तर वृद्धावस्थापर्यन्त धारण करावें, इसलिये हे चिरञ्जीविनी इस वस्त्र को धारण करे।

इस मन्त्र को पढ़ कर वर कन्या को दूसरा वस्त्र (दुपट्टा) देवे ।

जल लेकर विनीयोग करे ।

परिधास्ये इत्यादि मन्त्रस्याथर्वणं ऋषि स्त्रिष्टुपछन्दः तन्तवोदेवतावासः परिधाने विनियोगः ।

ओं परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि शतञ्चजीवामि शरदः पुरुचीरायस्पोष मभिसंयव्यिष्ये इति पठित्वा वरः परिधत्ते ॥

हे ! वस्त्र के देवता । नाना प्रकार के शुभ और सुन्दर वस्त्र धारण करने के लिए यश की वृद्धि के लिये और दीर्घकाल जीवन के लिए मैं इस वस्त्र को धारण करता हूँ । और इसके सम्बन्ध से सौ वर्ष जीवित रहूँ । इस मन्त्र को पढ़कर वर वस्त्र धारण करे ।

जल लेकर संकल्प करे ।

ॐ यशसेत्यादि मन्त्रस्य प्रजापति ऋषि र्जगतीछन्दो विधात्र्यो देवता वासोधारणे विनियोगः

ओं यशसा माद्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहतीयशोभगश्च मा विदद्यशो मा प्रति पद्यतामितिपठित्वोत्तरीयंपरिधत्ते ॥

आकाश, पृथिवी, इन्द्र और बृहस्पति, तथा सूर्य यह सूर्य यह सब देवता यशयुक्त होते हुवे मुझे यशस्वी बनावें। इस मंत्र से ऊपर का वस्त्र धारण करे।

ततः कन्याया वरस्य च द्विराचमनम् ॥

वर कन्या दोनों दो बार आचमन करें।

कन्या का पिता कहे।

परस्परं समञ्जेथामिति प्रोषितयोः कन्यावरयोः परस्परं सम्मुखीकरणम् ॥

तुम दोनों परस्पर देखो ऐसा यजमान कहे और नीचे लिखे मन्त्र से वह दोनों एक दूसरे को देखें

जल लेकर संकल्प करो

समञ्जन्त्विति मंत्रस्य अथर्वण ऋषिरनुष्टुपछन्दो विश्वेदेवादेवता मैत्रीकरणे विनियोगः ॥

वर कहे ओं समंजन्तु विश्वेदेवाः समापोहृदयानि नौ सम्मातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ इतिवरः पठेत् ॥

हे कन्ये विश्वदेवा, और जल हम दोनों के हृदयों को शुद्ध करे और शुद्ध वायु और गायत्री हमारे हृदयों में धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इनको स्थित करे।

ततः कन्या प्रदकर्तृक ग्रन्थिबन्धनं। कङ्कणबन्धनञ्च।

तदनन्तर परस्पर देखने के उपरान्त वर कन्या का ग्रन्थिबन्धन और कंकण बन्धन किया जाता है। ग्रन्थिबन्धन की विधि यह होती है कि *२८ छुहारे और एक जुट्ट तथा दक्षिणा किसी कपड़े में बांध कर उस

* कपड़े में जो द्रव्य बांधे जाते हैं उनके लिए प्रमाण

योगि याज्ञ वलक्य ने कहा है :—कन्या सदंशे पार्श्वे द्रव्यपुष्पफलाक्षतान्।

निक्षिप्यतांश्चसंबध्य वर वस्त्रेण योजयेत्। वस्त्रैः संयोज्यतौ पूर्व कन्यादानं समाचरेत्। दानेन युक्तयाः पश्चाद् विदध्यात्पाणि पीडनम्।

गांठ के साथ एक लम्बी मौली बांध दी जाती है। गांठ को कन्या के वस्त्र से बांधा जाता है, और मौली यज्ञोपवीत की तरह गले में डाल दी जाती है और देशाचार से हथलेवें [चक्की चुंग के आटे को गून्धकर कटोरी की शकल के दो पेड़े बनाकर उसमें सुपारी और दक्षिणा रखकर कन्या और वर के हाथों में सम्पुट किया जाता है। ऊपर मौली लपेट कर आशीर्वाद मन्त्र पढ़ने के उपरान्त गोत्रोच्चारण किया जाता है।

ततः ओ३म् भूर्भुवः स्वः अञ्चलग्रन्थे प्रतिष्ठोभव इति प्रतिष्ठाप्य ग्रन्थिं यजमानो गन्धादिभिः पूजयेत।

रक्षार्थं दक्षिणे हस्ते बन्धीयात्कङ्कणे तयोः। इतिलघ्वाश्वलायनस्मृत्युक्तः॥

कन्या का पिता कन्या और वर के दक्षिण हाथ में कङ्कण बन्धन करे।

शाखोच्चारण :—पहले लड़के का पुरोहित किसी मंगल मन्त्रों का उच्चारण करे और लड़के के प्रपिता पितामह और पितादि का नाम वा गोत्रोच्चारण करे इसी प्रकार फिर लड़की का पुरोहित करें।

ब्रह्मावेद पतिः शिवः पशुपतिः शक्रः सुराणांपतिः प्राणोदेह पतिःसदागतिरयं ज्योतिष्पतिश्चन्द्रमाः।

अम्भोधिः सरितांपति र्जलपतिः सूर्य्योग्रहाणांपतिः
सर्वे ते पतयः कुवेर सहिताः कुर्वन्तु तेमङ्गलम् ॥ १ ॥

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशर्मण: प्रपौत्राय ।

गंगा गोमति गोपतिर्गणपतिः गोविन्द गोवर्धनो
गीता गोमय गौरिजागिरिसुता गंगाधरोगौत्तमः ॥
गायत्री गरुडो गजाग्रजननी गम्भीरगोदावरी
गन्धर्व ग्रह गोपगोकुलगणाः कुर्वतुवोमङ्गलम् ॥ २ ॥

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य शर्मण: पौत्राय ॥

यं शैवाः समुपासते शिव इतिब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ॥

अर्हन्नित्यथजैन शासनरताः कर्म्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छित फलं त्रैलोक्यनाथोहरिः॥३॥

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशर्मणः पुत्राय ।

देवक्यां यस्यसूति स्त्रिजगति विदितारुक्मिणी धर्म्मपत्नी,
पुत्राः प्रद्युम्नमुख्याः सुरनरजयिनो वाहनं पक्षिराजः।
वृन्दाऽरण्ये विहारो व्रजपुरवनिता वल्लभाराधिकाद्याः,
चक्रं विख्यातमस्त्रं सजयति जगतांस्वस्तयेनन्दसूनुः ॥४॥

अमुक गोत्रस्य अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम् ।

गङ्गा सिन्धुः सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा,
कावेरी सरयूर्महेन्द्रतनया चर्म्मण्वती वेदिका ।

क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तुते मङ्गलम् ॥५॥

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणः पौत्रीम् ।

श्रीमत्पङ्कजविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलः,
चन्द्रोभास्कर वित्तपालवरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः ।
प्रद्युम्नो नलकूबरः सरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः ।
स्वामी शक्तिधरश्चलाङ्गलधरः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥६॥

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणः पुत्रीम् ।

आयुर्द्रोण सतेश्रियो दशरथे शत्रुघ्नयो राघवे,
ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने मानंच दुर्योधने ।

शौर्य्यं शान्तनवे बलं हलधरे सत्यञ्चकुन्तीसुते,
विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः कीर्तिश्चनारायणे ॥७॥

कन्यादान का महात्म्य

स्मृतियों और पुराणों में कन्यादान का फल विशेष लिखा है। जैसे सूत सहिता में लिखा है।

अश्वमेध सहस्रस्य वाजपेये शतस्य च।
एक कन्या प्रदानेन फलमाप्नोति नाकलौ ॥

अर्थात्—एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने का और एक सौ वाजपेय यज्ञ करमे का जो फल होता है, वह कलियुग में एक कन्या दान करने से प्राप्त होता है।

गोत्रोच्चारण के पश्चात् दाता * शंखी में दूर्वा, अक्षत, फल, पुष्प, चन्दन, तिल, कुशा और जल लेकर कन्या का दाहिना अँगूठा हाथ में लेकर कन्या दान करे।

---

*वृहत्पाराशर ऋषि ने लिखा है। कन्या दान समारम्भे दाता शंखे समाददेत् । दूर्वाक्षत फल पुष्पं चन्दनं जलमेव ग।

अथ कन्यादान संकल्प

ओं अद्यैतत्सद्ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशे कलौ युगे कलियुग प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्ते पुण्य क्षेत्रे ऽमुकतौ मासोत्तमे मासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ ऽमुकवासरे ऽमुक गोत्रोत्पन्नो ऽमुक शर्माहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तये ऽमुक गोत्रस्याह ऽमुक प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः प्रपौत्राय १

अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पौत्राय २

अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पुत्राय ३

अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो ऽमक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः प्रपौत्रीम् १

अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पौत्रीम् २

अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या ऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पुत्रीम् ३

(एवं त्रिवारं प्रपितमहा पितामहा पिता पठित्वा एवं कन्या वंशं पुनः पितृ वंशं क्रमेण त्रिवारं पठित्वा) कन्या नामान्तरम् मम समस्त पितृणां च समस्त पाप क्षय पूर्वक कल्प कोटि शतावधि निरति शय सानन्द ब्रह्म लोक महीय मानादि याव-ज्जीव पुत्र पौत्रादि सकल कुटुम्ब सहितात्मीय कलेवरा नाप्य दीर्घायुष्य [illegible] धन धान्य समृद्धि विविध

बहु तर सुख भोगा वास्य नन्त शत सहस्रशो ऽश्वमेध
राज सूर्य गृह मेध ज्योतिष्ठोमाग्निष्ठोमादि योग
कोटिशो दश गुणोत्तर धेन्व नडुद्यान रथ वाजि सर्व सस्य
संपूर्णं सर्व रत्नोपशोभितं सर्व पृथ्वी दान जन्य सम पुण्यं
प्राप्त्युत्तरै तत्कन्या शरीरावस्थित रोम सम संख्य युग
सहस्रा वच्छिन्न परमा नन्द भोगा स्पदा वाप्ति सहित
त्रिदिव वासोत्तर कल्प कोटि शतावलीढ श्री विष्णु लोक
वास कामनयाऽनेन वरेणास्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाण
सन्तत्या द्वादशा वरान् द्वादश परान् पुरुषान् पवित्री कर्तुं -

मात्मनश्च श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतयेच अमुक गोत्रामुक प्रवराममुक नाम्नी मिमा कन्यां सुस्नातां यथा शक्त्य लंकृतां गंधाद्यर्चितां वस्त्र युगाच्छन्नां प्रजापति दैवतकाम मुक गोत्रायाममुक प्रवरायामुकशाखाध्यायिने ऽमुक शर्म्मणे विष्णु रूपिणे ब्राह्मणाय वराय पत्नि त्वेन तुभ्य महं संप्रददे। इति शंखस्थ द्रव्य युत जलेन सह कन्याहस्तं वर हस्ते दद्यात्॥

अथ कन्या दान का [बड़ा] संकल्प

ॐ हरिः श्री विष्णुः प ुण्डरीकाक्षः पुनातु अद्य तत्सत ब्रह्म

अथानन्त वीर्यस्य श्री मदादि नारायणस्या चिन्त्याऽपरि
मितानन्त शक्ति समन्वितस्य स्वकीय मूल प्रकृति परम
शक्तया प्रकीड मानस्य सच्चिदानन्दसन्दोहरूपे स्वात्मनि
सर्वाधिष्ठाने स्वाज्ञान कल्पितानां महा जलौघ मध्ये परि
भ्रम्य माणानामनेक कोटि ब्रह्माण्डानामनेक तमे ऽस्मिन्
ब्रह्माण्डे ऽव्यक्त महदहङ्कार पृथिव्यप्तेज वाय्वा
काशादिभि र्दशगुणोत्तरै रावरणै रावृते आधार शक्ति श्री
कूर्म बराह धर्मानन्ताष्ट दिग्गजादि प्रतिष्ठिते ऐरावत
पुण्डरीक वामन कमुदाञ्जन पुष्प दन्त सार्व भौम सुप्रता-

काख्याष्ट दिग्दन्ति शुण्डा दण्डो त्तण्डितैतद्ब्रह्माण्ड खण्डयो रन्तर्गत भूर्लोक भवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जन-लोक तपोलोक सत्यलोकाख्यानां सर्वज्ञ सर्व शक्ति समन्वित सर्वोत्तम सर्वाधिप श्री चतुर्मुख प्रभृति स्वस्व लोका धिष्ठातृ पुरुषाधिष्ठिता नामधो भागे फणिराजस्य शेषस्य सहस्र फणा मण्डलैक फणोपरि सर्षपैक कणाय मान मही मण्डलान्तर गतातल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पातालानां स्वस्वाधिष्ठात्र धिष्ठितानां मुपरितने समेरु मंदिर मंदराचल निषध हिम गिरिशृंग

६९

वर्द्धम कूट दुर्द्धरपारि यात्रा शैल महाशैल महेन्द्र सह्याद्रि मलयाचल विन्ध्यपर्वतमुक चित्र कूट मैनाक मान सोत्तर त्रिकूटो… …चलास्ताचल पर्यन्ता नेकाभिधा नाद्रि गण प्रतिष्ठतायां जम्बू प्लक्ष शाल्मली कुश क्रौंच शाक पुष्क राख्य सप्त दीपवत्यां लवणेक्षु सुरा सर्पि दधि क्षीर शुद्धोदकाख्य सप्त सागर समन्वितायां समस्त भूरेखायां कमल कदम्ब गोलका कारायां वर्तमाने कुवलय कोशान्त र्गत दल वह्निराज माने उत्तर कुरू हिरण्मय रम्पक भद्राश्व केतु मालेला वृत हरि वर्ष किं पुरुष भारताख्य

नव खण्डवति जम्बू द्वीपे सर्वोभ्योऽप्यतिरिक्त सारवति देवादिभिरप्य भीष्ट सुकृत क्षेत्र भूत हेतु नाभिलषित तमे अङ्ग बङ्ग कलिंग काम्बोज सौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्र बङ्गालोत्कल मगध मालव नेपाल केरल चोरल गौड मल पाञ्चाल सिंहल मत्स्य द्रविड द्राविड़ कर्णाट राटव शूरसेन कौ[illegible] टोकण पाण्डय पुलिन्धान्ध्र द्रौण दशार्ण विदेह [illegible] मैथिल केकय कोशल कुन्तल मैन्ध्रुव, जाबल सार्[illegible] सिन्धु शाल भद्र मध्यदेश पर्वत काश्मीर पुष्टाहार सिंधु पारसीक गांधार बाह्लीक प्रभृत्ति

बहु विध देश विशेष सम्पन्ने दण्डकारण्य महारण्या
द्वैतारण्य कामुकारण्य सैन्धवारण्य प्रभृत्यनेकारण्य वलिं
श्री गङ्गा यमुना सरस्वती गोदावरी नन्दाल्क नन्दा
मन्दाकिनी कौशिकी नर्मदा सरयू कर्मनाशा चर्मण्वती
क्षिप्रा बेत्रवती कावेरी फल्गु मार्कण्डेय राम गंगा शतद्रु
विपाशैरावती चन्द्रभागा वितस्ता सिंधु दृषद्वती प्रभृत्य नेक
नद नदीवती कुरुक्षेत्र हरिद्वारक्षेत्र मालक्षेत्रादि बहु-
क्षेत्रान्विते भारत खण्डे तत्रापि मध्य रेखा कुरुक्षेत्रादमुक
दिग् भागे अमुकामुक नदी मध्ये श्री श्वेत वाराह कल्पे

वैवस्वत मन्वन्तरेऽअष्टाविंशे कलौ युगे कलि प्रथम चरणे
आर्यावर्ते पुण्य बृहस्पति क्षेत्रे शुभ संवत्सरेऽस्मिन्नमुकायन
गत सूर्येऽमुकर्त्ता वमुक मासेऽमुक पक्षेऽमुक तिथावमुक
वासरे यथा योग करण महूर्ते वर्तमाने चन्द्र तारानुकूले
पुण्येऽहनि अमक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या मुकवेदिनो-
ऽमुक शाखिनोऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः प्रपौत्राय १
अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या मुकवेदिनो ऽमुक शाखिनो
ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पौत्राय २ अमुक गोत्रस्य
यथोक्त प्रवरस्याऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक

सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पुत्राय ३ । अमुक गोत्रस्य यथोक्त
प्रवरस्याऽमुक वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक
शर्म्मणः प्रपौत्रीम् १ अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या
मुक वेदिनो ऽमक शाखिनो ऽमुक सूत्रिणो ऽमुक
शर्म्मणः पौत्रीम् अमुक गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्या मुक
वेदिनो ऽमुक शाखिनो ऽमक सूत्रिणो ऽमुक शर्म्मणः पुत्रीम्
इत्येवं गोत्र प्रवरादि निरूपण पूर्वक प्रपिता महादि
संज्ञा सम्बन्ध कथनम् त्रिरावर्त्य अमुक गोत्रां यथोक्त
प्रवरा ममुक नाम्नी मिमां कन्यां यथा शक्त्य

लंकृतां महद्वस्त्र द्वयावृतां विवाह दीक्षितां प्रजापति दैवतकां गङ्गा बालुकाभिः सप्तर्षि मण्डल पर्यन्त राशीकृत रेणु पुञ्जस्य मध्यावर्ष सहस्रावसाने एकैक वालुका पकर्षणेन सर्व वालुका पकर्षपरिमित काल पर्यन्तं ब्रह्म लोक निवास सिद्धयर्थ तिलैः सूर्य मण्डलं यावद्राशीभूततिल गिरितो वर्ष सहस्रवसाने एकैक तिलापकर्षणेन सर्व तिलापकर्षण संमित काल पर्यन्तं सूर्यलोक निवास सिद्धयर्थ यवैश्चन्द्र मण्डल पर्यन्तं कृतयवराशितोवर्षसहस्रावसाने एकैक यवापकर्षणेन

७५

सर्वं यवापकर्षण परिमित काल पर्यन्त चन्द्रलोक
निवास सिद्धयर्थं माषै ध्रुव मण्डल पर्यन्तं
राशी कृत माषेभ्यो वर्ष सहस्रावसाने एकैक
माषापकर्षण संमित काल यवविष्णु लोक रुद्र लोक
ध्रुव लोक निवास सिद्धयर्थं गंधर्वा प्सरो गण मण्डित
हंस पारावत शुक सारीकारुत नादत्ति किङ्किणी शत
समलं कृत दिव्य विमानेन मनो, ऽभिलषित देशगमन
पूर्वक गिरि नदो नद सिन्धु द्वीप दिव्य देश नन्दन चैत्र
रथ प्रभृति स्थानेष स्वभि लषित भोग्य विषयोप भोगार्थ

मया सह दश पूर्वेषां दशा वरेषां मद्धश्याना मग्निष्टोमा तिरात्र वाजपेय पुण्डरीकाश्वमेध क्रतु शतफल जन्य ब्रह्म लोक निवासार्थं पतीत्वेन तुभ्यं महं संप्रददे ॥ इति शंखस्थद्रव्य युत जलेन सह कन्याहस्तं वर हस्ते दद्यात् ॥

वर नीचे लिखे मंत्र को पढ़ता हुआ कन्या के दक्षिण अंगुष्ठ को ग्रहण करे ।

ओ स्वस्तीति प्रतिवचन मुक्ता द्यौस्त्वाददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णात्विति मन्त्रेण कन्याहस्तंवरः प्रतिगृह्णीयात् ।

कन्या दान के उपरान्त कन्या का पिता नीचे लिखे मंत्रों से प्रार्थना करे ।

कन्यादाना नन्तरं कन्या पिता प्रार्थना मन्त्रान् पटेत् ।

ओं कन्यां लक्षण संपन्नां कनकाभरणैर्युताम् ।

दास्यामि विष्णवेतुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया ॥ १ ॥
ऋषयः सर्वभूताना साक्षिणः सर्वं देवताः । इमां
कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणायच ॥ २ ॥ कन्यादानं
महादानं सर्वदानेषु दुर्लभम् । तदद्यदैवयोगेन त्वं
गृहाणवरोत्तम ॥ ३ ॥ गौरी कन्यामिमां विप्र यथा शक्ति
विभूषिताम् । गोत्राय शर्मणेतुभ्यं दत्तां विप्रसमाश्रय ॥४॥
मम वंश समुद्भूता द्वादश वर्षाणि पालिता । तुभ्य
विप्र मयदत्ता पुत्र पौत्र प्रवर्द्धिनो ॥५॥

अथ कन्यामीश्वरंच प्रार्थयेत् ॥

कन्ये मामाग्रतोभूयाः कन्ये मेदेवि पार्श्वयोः । कन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्तमाप्नुयाम् ॥ त्रैलोक्यनाथ देवेश सर्व भूत दयानिधे ॥ दानेनानेनमे प्रीतो भव शांतिं प्रयच्छमे । श्रुत्वा कन्या प्रदानं चपितरः प्रपितामहाः । विमुक्ताः सर्व पापेभ्यो ब्रह्मलोके व्रजंतिते ।

दश महा दान मंत्राः

कन्यार्थें कनक धन दासीरथ मही ग्रहाः ।

महिष्यश्वगजा-शाय्या महादानानि वैदिश ।

सवर्णमंत्रः----हिरण्य गर्धसंभूतं सौवर्णं चांगलीयकम्
सर्व प्रदंप्रयच्छामि प्रीणातु कमला पतिः ॥ क्षीरोद
मथने पूर्व मुद्रितां-कुण्डलद्वयम् । श्रियामहसमुद्भूत
ददे श्रीः प्रीयतामिति । कांचनं हस्त वलयं रुपकांति
सुख प्रदम् विभूषणं प्रदास्यामि विभूषयतुते सदा ।
अथ धेनु दान मंत्रः ॥ यज्ञसाधन भुता या विश्वस्याधौ
धनाशिनी । विश्वरूष धरो देवः प्रीयतामनयागवा ॥
अथ दासी दान मंत्रः ॥ इयं दासी मयातुभ्यं श्रीवत्स

प्रतिपादिता सर्व कर्म करी भोग्यायथेष्टं भद्रमस्तुमे ॥
अथ रथ दान मंत्रः ॥ रथायरथनाथाय नमस्ते
विश्वकर्मणे । विश्वरूपाय देवाय अरुणाय नमोऽस्तुते ॥
पृथिवी दान मंत्रः ॥ सर्वेषामाश्रया देवीवराहेण
समुद्धृता । अनंत सस्य फलदा अतः शांतिं प्रयच्छमे ।
गृहदान मंत्रः ॥ इदं गृहं गृहाणत्वं सर्वोपस्कर संयुतम् ।
तव विप्रसादेन मम संतुमनोरथाः । गृहंमम विभूत्यर्थं
गृहाण त्वं द्विजोत्तम ॥ प्रीयतां मे जगद्योनिर्वास्तुरूपी
जनार्दनः ॥ अथ महिषीदान मंत्रः ॥ महिषी यमरूपा

त्वं विश्वामित्र विनिर्मिते। पूजिता हरमेपापं सर्वदान फल प्रदे ॥ अथाश्वदान मंत्रः। महार्णवे समुत्पन्न उच्चैः श्रव सपुत्रक। मया त्वं विप्र मुख्याय दत्तो हयसुखीभव ॥ गज दान मंत्रः। गजेन्द्र मत्त मातंगदैत्य सैन्य विनाशक। तवदानेनमे शांतिः सर्वदातु महत्सुखम् ॥ अथ शय्यादानम् ॥ यथा न कृष्णशायनं शून्यं सागरजातथा। तथा शक्तया ममाप्यस्त्व शून्य जन्मनि जन्मनि। इति ॥ अथ रौप्य पात्र दानम् ॥ अगम्यागमनंचैव परदारा भिमर्शनम्। रौप्यपात्र

प्रदानेन तत्पापं मेऽव्यपोहतु ।

कन्या के पिता नीचे लिखे संकल्प से कन्या दान की प्रतिष्ठा के रूप में स्वर्ण (मुन्द्री) वर को देवे और एक रुपया वर परोहित को देवे ।

अद्यकृतैतत्कन्यादानयथोक्तफलावाप्तये कन्यादान-प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्नि दैवतं अमुक गोत्रायामुक-शर्म्मणे ब्राह्मणाय वराय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ओं स्वस्तीति (वर कहे)

ओं कोदात्कस्मादात्कामोदात्कामायादात्कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ।

वर प्रश्न करता है कि कौन देता है और किसको देता है स्वयं ही उत्तर देता है कि इच्छा देती है और इच्छा के लिए देता है

नीचे लिखे मन्त्र से वर वधू के दहिने हाथ को पकड़े और वधू का नाम लेवे।

ओं यदैषि मनसादूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्य-पर्णो वैकर्णस त्वा मन्मनसां करोतु श्री अमुक देवी-तिपठन्निष्क्रामति।

जब चञ्चलचित्त दिशाओं के उद्देश्य से वायु की तरह तुझे दूर ले जाता है तब वह वायु सूर्य और गुरुत्मान् तुझे मेरे में प्रेम वाली करे।

ततो वेदि दक्षिणस्यां दिशि वारिपूर्णदृढकलश-मूर्ध्वं तिष्ठतो मौनिनो मनुजस्यस्कन्धेऽभिषेकपर्य्यन्तं-धारयेत्।

जल से भरा हुआ कलश दृढ़ पुरुष कन्धे पर धारण कर चुपचाप अभिषेक तक वेदी के दक्षिण की ओर स्थित रहे!

ततः परस्परं समीक्षेथामितिकन्याप्रदप्रदप्रैषानन्तरं।

आप दोनों एक दूसरे को देखो यह कन्या का पिता कहे।

वर नीचे लिखे श्लोकों के अन्त में कन्या को देखे।

ओं अघोर चक्षुरपतिघ्न्येधि शिवापशुभ्यः सुमना-सुवर्चाः वीर सूर्द्देवकामा स्योना शन्नोभव द्विपदेशं-चतुष्पदे ॥१॥

हे वधु तेरी दृष्ठि पापकर्मो को न देखें, पतिव्रता हो, भृत्यों को प्रेम की दृश्ठि से देखती हुई अन्नादिकों से पालन कर और तेजस्वनी हो, वीर पुत्रों को पैदा कर, और देवताओं का पूजन करती हुई स्वयं सुखी हो और अन्य गृहस्थ मनुष्यों को वा चारपायों को सुखी कर।

यह कहता हुआ वर कन्या की ओर देखे।

सोमः प्रथमोविविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः। तृतीयो-ऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः॥ २॥

हे कन्ये! पहले तेरा चन्द्रमा रक्षक है दूसरा पति (रक्षक) गन्धर्व है तीसरा रक्षक अग्नि

है और चतुर्थपति मनुष्य है। वर फिर कन्या की ओर देखे।

सोमोददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये। रयिञ्च पुत्रां श्चादादग्नि मह्य मथोऽइमाम् ॥३॥

चन्द्रमा इसका संशोधन कर सूर्य को देता है सूर्य संस्कार कर अग्नि को देता है और अग्नि इसका संशोधन कर वर को पुत्रों और धन धर्म सहित देता है। अन्त में फिर वर कन्या को देखे।

सा नः पूषाशिवतमा मैरय सा न उरु उशती विहर। यस्यामुशंतःप्रहराम शेफं यस्यामुकामो बहवो निनिष्टयै ॥४॥

जो सम्पूर्ण जगत् को सत्तीरूप से देखता है वह वर सूर्य देवता शुभ गुणवाली इस कन्या का मुख में प्रेम हो और वह पत्नी मेरे से ही पुत्रोत्पत्ति को चाहती हुई अपने उरु भाग को फैलावे। इसके अंत में भी वर प्रेम पूर्वक कन्या को देखे :

ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्नेरहत वस्त्रवेष्टित तृण पुलके कटेवा दक्षिणपादं दत्त्वा वधूं दक्षिणतः कृत्वा तामुपवेश्य स्वयमुपविशेत् ॥

परस्पर निरीक्षण के अन्तर अग्नि की तीन प्रदक्षिणा कर अग्नि के पश्चिम दिशा की ओर नवीन शुद्ध तथा सदंश से लपेटा हुआ और सुरक्षित तृण पुलक पर अथवा कट कर दक्षिण चरन पहिले धर कर तथा वधू को दक्षिण की ओर बठावे और वर आप भी बैठ जावे,

वर पुष्प, चन्दन ताम्बूल वस्त्रादि लेकर संकल्प करे।

ओं अद्यकर्तव्य विवाह होम कर्मणि कृताकृत-वेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुममुक गोत्रम मक शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इती ब्रह्माणं वृणुयात् ॥

ओम् अद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि कृतावेत्तणरूप होतृ कर्म कर्तुममुक गोत्रममुक शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे। ।

ओं वृतोऽस्मिइति प्रतिवचनम् ।

मैं वृतहूँ ऐसे ब्रह्मा कहे ।

ओं यथा विहितं कर्म कुर्विति वरेणोक्ते ।

जैसे विधान है वैसे कर्म करें (वर कहे)

ओं करवाणीति प्रतिवचनम् ।

मैं करता हूँ ऐसा ब्रह्मा कहे ।

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्राग-

ग्रान्कुशानास्तीर्य्य ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिणा क्रमेणानीय अत्रत्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत् ।

तब अग्नि के दक्षिण की ओर शुद्ध आसन पर तीन कुशाओं को बिछावे ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर तुम मेरे ब्रह्मा हो ऐसे वर कह कर उस आसन पर स्थापित करे ।

ततः प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ।

ब्रह्मा के स्थापन के अनन्तर प्रणीता पात्र को आगे रख कर, जल से भर कर तीन कुशाओं से ढांप कर और ब्रह्मा के मुख की ओर देखकर कार्य कर्त्ता कार्य को करे ।

ततः परिस्तरणम् ।

प्रणीतापात्र के स्थापन के अनन्तर वह्नि के चारों ओर कुशाओं को बिछावे ।

बर्हिषश्चतुर्थ भागमादाय आग्नेयादीशानान्तं

ब्रह्मणो ऽग्निपर्यन्तं नैऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् ।

वहि कुशाओं में से चतुर्थ भाग लेकर अग्नि कोण से ईशान कोण तक ब्रह्मा से अग्नि तक नैऋत्य कोण से वायुकोण तक अग्नि से प्रणीता पात्र तक कुशाओं को बिछावे ।

ततो ऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भ कुश पत्र द्वयं प्रोक्षणीपात्रं, आज्यस्थालीः सँमार्जनार्थ कुशत्रयमुपयमनार्थं वेणीरूप कुशत्रयं समिधस्तिस्रः, स्रुवः, आज्यं षट् पंचाशदुत्तरवर मुष्टि शतद्वयावच्छिन्नां तण्डुल पूर्णं पात्रम् पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्व दिशि क्रमेणा-

सादनीयम् ।

परिस्तरण के अनन्तर वह्नि के उत्तर की ओर तथा पश्चिम भाग में पवित्र बनाने के लिये जो दो कुश रखे जायेंगे, उनके छेदनार्थ तीन कुशाओं को स्थापित करे। इस के पश्चात् पवित्र बनाने के लिये अग्रभाग के साथ और गर्भसहित दो कुश पत्रों को रखे । प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली स्रुव को साफ करने के लिये तीन कुशायें वेणी सदृश आकार की तीन कुशायें तीन समिधें रखें। स्रुव, शुद्ध घृत, वर की २५६ मुठि भर यवों वा तण्डुलों से पूर्णपात्र इस प्रकार पवित्रच्छेदनार्थ कुशाओं से लेकर पूर्णपात्र पर्यन्त उत्तर दिशा में पश्चिम से लेकर पूर्व तक रखे ।

अथ तस्यामेवदिशि असाधारण वस्तून्युपकल्पनीयानि तत्र शमीपलाशमिश्रा लाजा, दृषदुपलं कुमारिभ्राताः, शूर्पः दृढ़ पुरुषः अन्यदप्युपयुक्तमालेपनादिद्रव्यम् ।

फिर पूर्णपात्र के अनन्तर उत्तर की ओर में विशेष वस्तुयें रखनी चाहिएँ। जण्डीं के पत्र, लाजा, शिला, कन्या का भाई, छज्ज, बलवान पुरुष, और अन्य उपयोगी द्रव्य रखे ।

ततः पवित्रच्छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा—

ततः सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् । ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तकरणम् । अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुदिंगहनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणं ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादित वस्तुसेचनं, ततोऽग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्र निधानम् ।

प्रणीता पात्र के समीप प्रोक्षणी पात्र को रखकर पवित्र ग्रहण किये हुए हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणीपात्र में डाले प्रक्षेप करे। तब अनामिका और अङ्गुष्ठ से

पवित्रे को ग्रहण करे और तीन बार उत्पवन करे। पवित्रे को प्रोक्षणी पात्र में रखकर फिर प्रोक्षणी पात्र को दाएँ हाथ से उठा कर बाएँ हाथ पर रखे। तदनन्तर अनामिका और अङ्गुष्ठ से पवित्र को ग्रहण कर ऊपर को तीन बार जल फैंके, प्रयोजन वाले जितने भी आज्य स्थाली से लेकर पूर्ण पात्र पर्य्यन्त हैं उन सब का प्रोक्षणीजल से क्रमद्वारा उत्तान हाथ से प्रोक्षण करे। तदनन्तर अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में प्रोक्षणापात्र को स्थापन करे।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणाक्रमेण पर्य्यग्निकरणम् । ततः स्रुवः प्रतपनं कृत्वा संमार्जनं कुशानमाग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवः संमार्जनं प्रणीतोदकेनाभ्युदय पुनः त्रिप्रताप्य स्रुवं दक्षिणतोनिद-
ध्यात् । आज्यस्थालीमग्नेरवतार्य तत आसाद्य प्रोक्षणी—

बदुत्पवनम् । अवेदय सत्यपद्द्रव्य तन्निरसन पुनः प्रोक्षणीवदुत्पवनं ।

घृत स्थाली में घृत को डाले । इसको वह्नि पर रखे (अधि श्रवण करे) तदनन्तर जलते हुए तृण को दायें हाथ से लेकर तथा प्रदक्षिणक्रम से हवि के चारों ओर घुमाकर तृण को अग्नि में फैंके, स्रुवा को तपावे तदनन्तर बायें हाथ में ग्रहण कर संमार्जनकुशाओं से मूल से लेकर अग्नि पर्यन्त संशोधन करे। फिर प्रणीता के जल से स्रुव का अभ्युक्षण करे और फिर तपा कर दक्षिण की ओर कुशा पर दायें हाथ से स्थापन करे । आज्य को वह्नि से उतार कर परोक्षणी की तरह उत्पवन करे। तदनन्तर प्रोक्षणी का उत्पवन पहिली भांति करे ।

तत उपयमन कुशान् वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्तास्तिस्र समिधः क्षिपेत् ॥

तब उपयमन कुशायें जो सुरक्षित हैं उनको वायें होथ से लेकर उठाता हुआ बिना

मन्त्र के, प्रजापति का ध्यान करता हुआ चुपचाप घृत से लिपटी हुई तीन समिधाओं का प्रक्षेप करे।

तत उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन, प्रदक्षिण क्रमेणाग्नि पर्युक्षणङ् कृत्वा पवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्ध समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्याहुतीर्जुहोति।

समिधाओं के प्रक्षेप के बाद अपने आसन पर बैठकर पवित्र ग्रहण किये हुए दक्षिण हाथ से प्रोक्षणी पात्र के जल को क्रम से वह्नि के चारों ओर फैंके। इस के अनन्तर पवित्र को प्रणीता पात्र में रखे। तदनन्तर दायें गोडे को नीचे कर कुशा से ब्रह्मा से आरब्ध हुवा जलती हुई अग्नि में स्रुवे से घृत की आहुति का प्रक्षेप करे।

तत्राऽधारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्य नन्तरं स्रुवावस्थित हुतशेषघृतस्यप्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

आधार संज्ञावाली अर्थात् "ओं प्रजापतये स्वाहा" से लेकर ...
आहुति पर्य्यन्त बारह आहुतियों में एक एक आहुति के अनन्तर हुतशेष का प्रोक्षणीपात्र में पक्षेप करना चाहिये ।

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदम्प्रजापतये न मम । इति मनसा ॥

प्रजापति के लिये सुहुत हो यह यह्नि में डाला जा रहा द्रव्य प्रजापति के लिये है, मेरे लिये नहीं ऐसा मन में कहे ।

ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम, इत्याघारौ ।

इन्द्र के लिये सुहुत हो, यह इन्द्र के लिये है मेरे लिये नहीं, ऐसे डाले ।

ओं अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ।

अग्निदेवता के लिये सुहुत हो, अग्नि के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं सोमायस्वाहा, इदम् सोमाय न मम ।

इत्याज्यभागौ ।

सोम के लिये सुहुत हो, सोम के लिये है मेरे लिये नहीं । यह आंज्य भाग वाली आहुतियें हैं ।

ओं भूः स्वाहा इदं भूः न मम

भूः के लिये सुहुत हो, यह भूः के लिये है मेरा नहीं ।

ओं भुवः स्वाहा, इदं भवः न मम ।

भवः के लिये सुहुत हो, यह भवः के लिये है मेरा नहीं ।

ओं स्वः स्वाहा, इद स्वः न मम । एता महा व्याहृतयः ॥

यह स्वः के लिये सुहुत हो, यह स्वः के लिये है मेरा नहीं । यह महाव्याहृतियें हैं ।

ओं त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ-अवयासि सीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो

विश्वाद्वेषाॅं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणा-
भ्याम् न मम ॥

हे अग्ने, प्रकाशशील, सब कुछ जानने वाली तुम इस काम में वरुण देवता के क्रोध को दूर करो और सम्पूर्ण सुख प्राप्त कराओ, यह द्रव्य अग्नि और वरुण के लिए है मेरा नहीं।

ओं सत्वन्नोऽग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याउषु-
सोव्युष्टौ । अवयद्क्ष्वनो वरुणँ रराणो वीहिमृडीकॅ
सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् न मम ॥

हे अग्ने यज्ञ में समीप होकर रक्षा करो, हमारे पापरूपी आवरण को दूर करो और हमें सदा धान्यादिक और सुख देवो, जिस से हम सदा आपको अपने यज्ञ में बुलावें। यह अग्नि और वरुण के लिए है मेरा नहीं।

ओं अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्वमित्त्व
मयाअसि । अयानोयज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजँ

स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥

हे निश्पाप मनुष्य की रक्षा करने वाले अग्नि तुम सर्वत्र विद्यामान हो, तुम हमारे द्रव्यादिक को देवताओं के लिये शुद्ध चित्त से पहुँचाते हो, इस लिये समस्त गुणों से युक्त तुम हमारे दुःखों को नाश करो और सुख देओ। फैंका हुआ द्रव्य तुम्हारे लिये है, मेरा नहीं।

ओं ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तस्तेभिर्नोऽद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥

हे वरुण, जो तेरे शत, या सहस्त्र बन्धन भूत पाश हैं, उन विस्तृत और दीर्घ पाशों से सूर्य, विष्णु, विश्वेदेवा, और वायु हमें छुड़ाये।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमँ

अथाय । अथावयमादित्य व्रते तवा नागसोऽदितये स्याम् स्वाहा ॥ इदं वरुणाय नमम । एताः सर्वप्रायश्चि संज्ञकाः ॥

हे वरुण, जो तेरे उत्तम पाश हैं उन से हमारी रक्षा करो, अधम और मध्यम पाश को दूर करो, हे आदित्य, निरापराध हम दीनता से सदा पृथक रहें। यह फैंका हुआ द्रव्य अग्नि के लिये है मेरा नहीं। यह सब प्रायश्चित संज्ञा वाली आहुतियें हैं।

ओं ऋताषाड ऋतधामग्निर्गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहावाट् ॥१॥ इदं मृता साहे ऋतधाम्नेऽग्नयं गन्धर्वाय न मम ॥ ओं ऋताषाड ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥२॥ इदं

मौषधीभ्यो ऽप्सरोभ्योमुदभ्यो न मम ॥

जो सत्य को सहन करने वाला और गन्धर्व रूप अग्नि हमारी ब्रह्मण जाती वा ज्ञान की और क्षत्रिय जाती वीर्य की रक्षा करे यह द्रव्य गन्धर्व रूप अग्नि के लिये है मेरा नही । १। पूर्वोक्त गन्धर्व रूप अग्नि को उसकी औषधियों और अप्सराओं के लिए सुहुत हो यह उनके लिये है मेरा नहीं । २ ।

ओं सँ हितो विश्वसोमा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावाट् ।

इदं सँ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय० ॥

सम्पूर्ण समावेदादि से अलंकृत दिन रात्रि की संधि करने वाला गन्धर्व रूप जो सूर्य है उसके लिये सुहुत हो । यह गन्धर्व रूप सूर्य के लिये है मेरा नहीं ।

ओ सँ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्य मरीचयो

प्सरस आयुवो नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदम्मरीचिभ्यो प्सरोभ्य

आयुभ्यो० ॥

उपरोक्त गुणों से युक्त जो सूर्य्य भगभान हैं उसकी आयु नाम वाली किरणें अप्सरा हैं उनके लिये सुहुत हो। यह उनके लिये है मेरा नहीं।

ओं सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावाट् ॥ इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय ॥

यज्ञ द्वारा सुख के देने वाला और सूर्य की किरणों की तरह किरणों वाला जो गन्धर्व रूप चन्द्रमा है। उसके लिए सुहुत हो। यह उनके लिये है मेरा नहीं।

ओं सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य न क्षत्राण्यप्सरसो भेकरयो नामताभ्यः स्वाहा ॥ [इदं नक्षत्रेभ्यो]ऽप्सरोभ्यो भेकरीभ्यः० ॥

उपरोक्त जो गन्धर्व रूप चन्द्रमा है उसकी नक्षत्र रूपी अप्सरायें भेकुरी नाम वाली उनके लिये सुहुत हो।

ओ इषिरो विश्वऽयचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदमिषिराय विश्वऽयचसे वाताय गन्धर्वाय०

तेज चलने वाली जो गन्धर्व रूप वायु है वह हमारी रक्षा करें उसके लिए सुहुत हो मेरा नहीं।

ओं इषिरो विश्वऽयचावातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ता यः स्वाहा ॥ इदमद्भ्योऽप्सरोभ्यः ऊर्भ्यः० ॥

उपरोक्त गुणों वाला जो वायु है उसकी जलरूपी जो अप्सराएं प्रभु डाम वाली हैं उनके लिये है मेरा नहीं।

ओं भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं

पातु तस्मै स्वाहा वाट॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय० ॥

पालन करने वाला और सुन्दर स्वर्ग में गमनशाली यज्ञ रूप गन्धर्व हमारी रक्षा करें यह उनके लिये सुहुत हो मेरा नहीं ।

ओं भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरस स्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो ० ॥

जो यज्ञ रूप गन्धर्व हैं उसकी दक्षिणा नाम वाली अप्सरायें हैं उनके लिए सुहुत हो।

ओं प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्॥ इदं प्रजापतये विश्व कर्मणे मनसे गन्धर्वाय० ॥

सकल कार्यकर्ता और संसार का रक्षक जो मनो रूप गन्धर्व है वह हमारी रक्षा करे। यह उसके लिए सुहुत हो मेरा नहीं।

ओं प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सा-मान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमृक्सा-मभ्योऽप्सरोभ्यः एष्टिभ्यो ॥ इति राष्ट्रभृद्धोमः

जो मनो रूप गन्धर्व है उस की धर्मार्थ काम काम मोक्ष देने वाली ऋग्वेद और सामवेद आदि रूपी अप्सरायें हैं उनके लिये सुहुत हो ॥ यह राष्ट्रभृत्संज्ञा वाला होम है

ओं चित्तञ्च स्वाहा इदं चित्ताय० ॥

यह चित्त के लिये सुहुत हो मेरे लिये नहीं।

ओं चित्तिश्चस्वाहा। इदं चित्त्यै० ॥

यह शुद्ध ज्ञानेन्द्रिय के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं आकूतञ्च स्वाहा ॥ इदमाकूताय ॥०

यह शुद्ध अभियप्राय के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं आकूतिश्चस्वाहा ॥ इदमाकूत्यै०

यह शुद्ध इच्छा के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं विज्ञातञ्चस्वाहा । इदं विज्ञाताय० ॥

मैं शिल्पादि ज्ञान वाला होऊं ।

ओं विज्ञातिश्चस्वाहा ॥ इदं विज्ञात्यै ०॥

यह शिल्पादि के देवता के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं मनश्च स्वाहा । इदं मनसे० ॥

यह शुद्ध मन के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं शक्वर्यश्चस्वाहा । इदं शक्करीभ्यो ॥

यह ज्ञानेन्द्रिय के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं दर्शश्चस्वाहा । इदं दर्शाय० ॥

यह अमावस्या के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं पौर्णमासञ्चस्वाहा ॥ इद पौर्णमासाय ॥

यह पौर्णमासय के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं बृहच्च स्वाहा । इदं बृहते०

यह बृहत्साम के लिये है मेरे लिये नहीं]

ओं रथन्तरञ्च स्वाहा । इदं रथन्तराय० ॥

यह रथान्तर साम के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ओं प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छ दुग्रः पृतनाजयेषु तस्मै विशःसमनन्त सर्वाः स उग्रः स इहव्नो बभूव स्वाहा ॥ इतिजयाहोमः ।

परमात्मा ने इन्द्र को जया संध्या वाले मन्त्र दिये, उस से समप प्रजा इन्द्र के सामने

यह द्रव्य उस के लिये सुहुत हो। यह मन्त्र शत्रुओं को जीतने वाला है इस कारण यह जयहोम हुआ।

ओं अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा॥ इदमग्नये भूतानामधिपतये० ॥

अग्नि प्राणियों का राजा है, वेद पठन में, बल साध्य प्रजा पालन में, इस कामना में, इस कर्म में, इस कन्या और देवताओं के आवहने कर्म में मेरी रक्षा करे। यह प्राणियों के अधिपति के लिये है मेरा नहीं।

ओं इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्-

कर्म्मण्यस्यांदेवहूत्याँ स्वाहा ॥ इममिन्द्राय ज्येष्ठा-
नामधिपतये० ॥

इन्द्र बृहस्पत्यादि देवताओं का प्रभु है हमारी रक्षा करे । यह बृहस्पति आदि देवताओं के अधिपति इन्द्र के लिए है मेरे लिये नहीं ।

ओं यमःपृथिव्याअधिपतिः स मा वत्वस्मिन् ब्रह्म
ण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्म्मण्य-
स्यादेवहूत्यँ स्वाहा ॥ इदंयमाय पृथिव्या अधिपतिः ॥
अत्रप्रणीतोदकस्पर्शः ॥

पृथिवी के सकल प्राणियों का स्वामी यह धर्मराज है । यह द्रव्य पृथ्वी के प्राणियों के अधिपति धर्मराज के लिये है मेरे लिये नहीं ।

यहां प्रणीता के जल का स्पर्श करना । दाहिने हाथ की पांचों अंगुलियों को कमल के समान करके स्पर्श करे और उपाध्याय आशीर्वाद देवे ।

चैरंजीऽयमहातेजाश्चित्ताद्या दिवौकसः ।

प्रयच्छन्तु करे वाञ्छां द्वयोः कन्या कुमारयोः ॥

ओं वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मा वत्वस्मिन् ब्रह्म-
एयस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म
एयस्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं वायवेऽन्तरिक्षयाधिपतये

आकाश का अधिपति वायु हमारी इन ब्रह्मकर्मादियों में रक्षा करे। यह आकाश के अधिपति वायु के लिए है मेरे लिये नहीं।

ओं सूर्योदिवोऽधिपतिः स मा वत्वस्मिन्ब्रह्मएयस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मएयस्यां
देवहूत्याँ स्वाहा इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये ॥

दिन का अधिपति सूर्य इन ब्रह्मकर्मादियों में हमारी रत्ता करे। यह दिन के अधिपति सूर्य के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं चन्द्रमा नत्तत्राणामधिपति स मा०॥ इदं चन्द्रमसे नत्तत्राणामधिपतये० ॥

नत्तत्रों का स्वामी चन्द्रमा इन ब्रह्मकर्मादियों में हमारी रत्ता करे। यह नत्तत्र के स्वामी चन्द्रमा के लिए है मेरे लिये नहीं।

ओं बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः समा० ॥ इदं बृहस्पतयेब्रह्मणोधिपतये० ॥

वेद का अधिपति बृहस्पति हमारी ब्रह्मकर्मादियों में रत्ता करे यह वेद के स्वामी बृहस्पति के लिये है मेरे लिये नहीं

ओं मित्रः सत्यानामधिपतिः स मा वत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन् त्तत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्म्मण्य

स्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं मित्राय-सत्यानामधि-
पतये० ॥

प्रकाश करने वाले पदार्थों के स्वामी सूर्य हमारी इन ब्रह्म कर्मादियों में रक्षा करे। यह प्रकाश करने वाले पदार्थों के अधिपति सूर्य के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं वरुणोऽअपामधिपतिःसमा० ॥ इदं वरुणाय अपामधिपतये० ॥

जलों के स्वामी वरुण देवता हमारी इन ब्रह्म कर्मादियों में रक्षा करें। यह जलों के अधिपति वरुण के लिये है मेरे मिये नहीं।

ओं समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं समुद्राय स्त्रोत्या

नामधिपतये ० ॥

नदियों के स्वामी समुद्र हमारी ब्रह्मकर्मादियों में रक्षा करे। यह नदियों के स्वामी समुद्र के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं अन्नँ साम्राज्यानामधिपतिः समा० ॥ इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० ॥

सब समृद्धियों के स्वामी अन्न हमारी इन ब्रह्म कर्मादियों में रक्षा करें। यह समृद्धियों के स्वामी अन्न के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं सोम औषधीनामधिपति स मा० ॥ इदम सोमायऔषधीनामधिपतये० ॥

औषधियों के स्वामी चन्द्रमा हमारी इन ब्रह्मकर्मादियों में रक्षा करें। यह औषधियों के अधिपति चन्द्रमा के लिये है।

ओं सविता प्रसवानामधिपतिः स मा वत्वस्मिन्

ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां धेवहूत्यॉं स्वाहा ॥ इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये०

उत्पन्न होने वालों के स्वामि सविता हमारी इन ब्रह्मकर्मादियों में रक्षा करें। यह उत्पन्न होने वालों के स्वामि सविता के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं रुद्रः पशूनामधिपतिः स मा० ॥ इदं रुद्राय-पशूनामधिपतये० ॥ अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः ॥

पशुओं के स्वामी रुद्र हमारी ब्रह्मकर्मादियों में रक्षा करें। यह पशुओं के स्वामि के लिये है मेरे लिये नहीं।

यहां प्रणीता के जलका स्पर्श करे। उपाध्याय आशीर्वाद दे।

उत्सर्गे चद्वितीये ऽस्मिन् प्रयच्छन्त्वनिलादयः पुत्राल्लक्ष्मीं तथा कामान् द्वयोः कन्या कुमारयोः।

ओं त्वष्टा रूपाणामधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं त्वष्ट्रे रूपाणा मधिपतये० ॥

व्यक्तियों के स्वामि त्वष्टा इन ब्रह्मकर्मादियों में हमारी रक्षा करें। यह व्यक्तियों के स्वामि त्वष्टा के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मा० ॥ इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये० ॥

पर्वतों के स्वामी विष्णुः इन ब्रह्मकर्मादियों में हमारी रक्षा करें। यह पर्वतों के स्वामी विष्णु के लिये है मेरे लिये नहीं।

ओं मरुतो गणानामधिपतयस्ते मा० ॥ इदं

मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यः० ॥

रुद्रगणों के स्वामी मरुत् इन ब्रह्मकर्मादियों में हमारी रक्षा करें। यह रुद्रगणों के स्वामी मरुत् के लिए है मेरे लिए नहीं।

ओंपितरःपितामहाःपरेवरेततास्ततामहाइहमा०वंत्वस्मिन्त्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्या देवहूत्याँ स्वाहा॥इदंपितृभ्यःपितामहेभ्यःपरेभ्योवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यः०।प्रणीतोदकस्पर्शः॥इत्यभ्यातांननामकोहोमः॥

पितर हमारे गोत्र के पितर तथा पूर्व के मृत पितर हमारी रक्षा करें। यह पित्रादियों के लिए है मेरा नहीं।

यहां प्रणीता पात्र के जल का स्पर्श करे। उपाध्याय आशीर्वाद दें। यहां अभ्युतान आहुतियें समाप्त हुई ॥

अथाज्यहोमः॥ ओं अग्निरैतु प्रथमोदेवतानाँ सोस्यै

प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात्। तदयँ राजा वरुणोऽनुमन्यतां
यथेयँ स्त्री पौत्रमधन्न रोदात् स्वाहा। इदमग्नये॥

देवतों में जो मुख्य अग्नि है यह इस कन्या से होने वाली सन्तान को मौत से छुड़ावे। जलों का स्वामी वरुण इस कन्या की होने वाली सन्तान की रक्षा करे जिससे यह पुत्र सम्बन्धि दुर से रोदन न करे। अग्नि में फैंका जा रहा द्रव्य अग्नि के लिए है मेरे लिए नहीं।

ओं इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु
दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तुमाता पौत्रमानन्द
मभिप्रबुध्यतामियँ स्वाहा॥ इदमग्नये॥

यह अग्नि इस कन्या के होने वाले पुत्रादियों की दीर्घायु करे इस कन्या की गोद कभी शून्य न हो और पुत्र पौत्रादि सम्बधि आनन्द को भोगे। यह अग्नि के लिए है मेरा नहीं।

ओं स्वस्तिनोऽग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्य यथा

यजत्रा । यदस्या महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं देहि चित्रँ स्वाहा । इदमग्नये ॥

पूजा करने वाले की रक्षा करने वाले हे अग्ने ! पृथ्वी से लेकर स्वर्गपर्य्यन्त जो सुख और इन में पैदा होने वाले जो द्रव्य हैं वह मुझ को दे । यह अग्नि के लिए है मेरा नहीं ।

ओं सुगन्नु पन्थां प्रविशन्नु एहि ज्योतिष्मद्ध्येह्यजरन्न आयुः । अपैतु मृत्युरमृतं न आगाद्वैवस्वतो नोऽभयं कृणोतु स्वाहा ॥ इदमग्नये ।

सुगम मार्ग का उपदेश करते हुए आयु को दो । आप की कृपा से हमारी मृत्यु का निवारण हो और हमें आनन्द प्राप्त हो तथा यमराज का भी भय न हो । यह धर्मराज के लिए है मेरा नहीं ।

ततो वस्त्रेणान्तर पटपिधानम् ॥

❋ यहां वर कन्या के मध्य में एक वस्त्र से परदा कर मन्त्र को चुप चाप मन में पढ़े।

ओं परं मृत्योऽनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्, चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाँ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा ॥ इदं वैवस्वताय ॥ अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः ॥

हे मृत्यु देवः जो आपका देव मार्ग से निकृष्ट पृथक् पितृमार्ग नामक मार्ग है, पराङ् मुख होकर उस मार्ग का अनुसरण करो। ज्ञान वाले तथा सुन रहे आप से कुछ कहता हुँ। कि आप हमारी सन्तान तथा वीर पुत्रों को मत मारो। यह मृत्यु के लिए है मेरा नहीं। यहां प्रणीतोदक को स्पर्श करे। उपाध्याय आशीर्वाद दे !

❋ रौद्रो पैत्री तथा मृत्योः इति कारिकायां दोष श्रवणाद्वरः वधू वस्त्रेणान्तर्धाय मनसा मंत्र पठन् मृत्येव जुहोति। अर्थात् रुद्र पिता, और मृत्यु सम्बंधि मन्त्र वधू के साथ ऊँची स्वर से पढने का दोष कारिका में लिखा है।

गोविन्दोगोकुलेवसन् गोपीभिर्विहरन् सदा ।
तुष्टि पुष्टि करो नित्यंद्वयोः कन्या कुमारयोः ॥

ततोवधूमग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ् मुखौस्थितौ भवतः, ततोवराञ्जलि पुटोपरि संलग्नवध्वञ्जलिस्थ घृताभिघारित वधूभ्रातृदत्त शमी पलाशामिश्रैर्लाजैर्मन्त्रपाठपूर्वकः ।

वधू को आगे कर वधू और वर दोनों पूर्वाभिमुख स्थित हों । वर की अञ्जलि के ऊपर वधू की अञ्जलि हो, उस में घृत से लिप्त और वधू के भाईयों से दी हुई शमीपत्रों से मिश्रित लाजाओं से मिली हुई अंजलि से मन्त्र पड़कर हवन करे ।

वधूकर्त्तृ का लाजा होम ॥ हस्त ग्रहण ॥ अश्मारोह-अग्नि प्रदक्षिणा विधिः ।

ओं अर्य्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत । स अर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चन्तु मापतेः स्वाहा । इदमर्यम्णे० ।

यह कन्या अग्निस्वरूप सूर्य देव की पूजन करती हुई, पूजन किया हुआ वह सूर्य कन्या को श्वसुर घर जाने की आज्ञा दे । यह सूर्य देव के लिए है मेरा नहीं ।

ओं इयं नार्य्युपब्रूते लाजानावपन्तिका, आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा इदमग्नये० ।

यह नारी अग्नि में लाजाओं को गेरती हुई कहती है, कि मेरा पति चिरजीवी हो और मेरे बान्धवादि सब वृद्धि को प्राप्त हों । डाला हुआ द्रव्य अग्नि के लिए है मेरे लिए नहीं ।

ओं इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धि करणं तव, मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा ।

इदमग्नये०।

हे पति ! तुम्हारी वृद्धि के लिए, यह लाजा अग्नि में डालती हूँ और हमारा तुम्हारा प्रेम परस्पर निरन्तर रहे।

ततो वधूदक्षिण हस्तं साङ्गुष्टं गृह्णाति वरः।

फिर वर वधू के दक्षिण हस्त को अङ्गूठे के साथ ही ग्रहण करे। और नीचे लिखे ४ मन्त्र पढ़े।

ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या-जरदष्टिर्यथा सः। भगो अर्य्यमा सविता पुरन्धिर्म्मह्यन्त्वा दुर्गार्हपत्यायदेवाः॥

हे कन्ये मैं तेरे दक्षिण हाथ को ग्रहण करता हू जिस से तू मेरे साथ रहती हुई वृद्ध अवस्था को प्राप्त हो। तुझे रूपवती को भगादि तीन देवताओं ने मुझे अपनी पत्नी बनाने के लिए दिया है।

ओं अमोऽहमस्मि सा त्वँ सा त्वमस्य मोऽअहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् ॥

हे कन्ये मैं विष्णु हूं और वैसे ही तु लक्ष्मी माया है। मैं सामवेद हूँ तु ऋचा है। और यैं आकाश हूँ और तू पृथिवी है।

ओं ता वेवि विवहावहै सह रेतो दधावहै । प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विंदावहै बहून् ॥

हम दोनों का विवाह होता है और दोनों रज और वीर्य को एकत्रित करते हुए सन्तान को पैदा कर प्राप्त करें।

ओं ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्य-मानौ । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतम् ॥

यह पुत्र सौ वर्ष तक जीवें और हम दोनों परस्पर प्रेम करते हुए इस मनोकामना से युक्त तेजस्वी होवें एक दूसरे को सौ वर्ष देखे सुनें और सौ वर्ष जीवें,

अथवधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखीं पूर्वोपकल्पित दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः

नीचे लिखे मन्त्र से वर अग्नि की उत्तर दिशा में स्थापित पाषाण पर पूर्वमुख कन्या का दक्षिण पाव रखवायें।

ओं आरोहे मम श्मानमश्मेवत्वँ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽववाधस्व पृतनायतः। इतिमन्त्रेण॥

हे वधू! तू इस पत्थर की शिला पर स्थित हो और गृह कार्यों में तू भी पत्थर की तरह दृढ़ हो, मेरे साथ कष्टों को सह और झगड़ालू कनुष्यों का नाश करो।

अथारूढायामेव तस्यां वरो गाथां गायति।

पाषाण पर कन्या के पांव धरा रहने पर ही वर नीचे लिखी गाथा का गान करे।

इस मन्त्र से अग्नि को हाथ जोड़ो।

ओं सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति ॥ यां त्वा विश्वस्यभूतस्य प्रगायामस्याग्रतः । यस्यमिूतँ सम भवद्यस्यां विश्वमिदंजगत्तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः ॥

हे सरस्वति, हे सुभगे, तू हम दोनों की भली भांति रक्षा कर । क्योंकि तू सर्व भूत वर की माता है और सब से पहले है प्रलय के समय जिस में सारा संसार लीन होता है और सृष्टि काल में जिस से सारा संसार पैदा होता है, उस सरस्वती की गाथा गायन करता हूँ। जिस की गाथा स्त्रियों को उत्तम देने वाली होती हैं।

ततोऽग्रेवधू पश्चाद्वरः प्रणीता ब्रह्मसहितमग्निं प्रदक्षिणं कुरुतः तत्र वरपठनीयो मन्त्रः ॥

फिर आगे वधू पीछे वर प्रणीता ब्रह्म सहित अग्नि की प्रदक्षिणा करे और नीचे

लिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ वर अग्नि की प्रदक्षिणा करे ।

ओं तुभ्यमग्ने पर्यवहन्सूर्य्यां वहतु ना सह । पुनः पतिभ्यो जायांदाऽग्ने प्रजयासहेति पठन् परिक्रमेत् ।

हे अग्नि जन्म से लेकर सोमादि देवों ने तेरे लिये इस कन्या को ग्रहण किया था अतः परम पुरुषार्थ के कारण तुम सूर्य की स्त्री रूपा इस को प्राप्त कर और उसको स्त्रीत्व से भोग कर पौत्रों के साथ मुझे दे ।

नोट—इस के पश्चात दो बार और इस तरह लाज होम, अङ्गुष्ठ ग्रहण पाषाणरोहण अग्नि प्रदक्षिणा और गाथा गायन ऊपर की तरह करना ।

फिर बची हुई लाजाओं को कन्या का भाई शूर्प कोण से कन्या की अंजलि में डाल और कन्या उन लाजाओं को अंजलि से

'ओं भगाय स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर डाले,

'इदं भगाय न मम' यह भग देवता के लिये है मेरे लिये नहीं ।

ततोऽग्रे वरः पश्चाद्वधूस्ततस्तूष्णी चतुर्थ परिक्रमणम् ।

फिर आगे वर पीछे वधू चौथी परिक्रमा चुप चाप करे ।

ततो वर उपविश्य ब्रह्मणान्वारब्धः, आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात् ।

फिर वह अपने आसन पर बैठ कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध किया हुआ आज्य से प्रजापति देवता का हवन करे ।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । इति मनसा ।

यह प्रजापति के लिये सुहुत हो । यह प्रजापति के लिये है मेरे लिये नहीं ।

अत्र प्रोक्षणी पात्रे हुतशेषाज्यस्य प्रक्षेपः ।

तत आलेपनेनोत्तरोत्तरकृत सप्तमण्डलेषु सप्तपदाक्रमणं वरः कारयेत् वक्ष्यमाणमन्त्रैः ॥

चन्द्रादियों से उत्तर से उत्तर की ओर सप्त मण्डलों को बना कर उनमें वर पदाक्रमण

वक्ष्यमाण मन्त्रों से करावे ।

॥ सप्तपदियों के विषय में विवर्ण ॥

हिन्दुओं के विवाह में सप्तपदी विवाह संस्कार का एक प्रधान अंग है । इस के बिना विवाह पूर्ण नहीं माना जाता ।

मनुस्मृति में लिखा है—

॥ पाणीग्रहणका मन्त्रा नियतंदारलक्षणम्

तेषां निष्ठातु विज्ञेयाविद्धद्भिः सप्तमे पदे ।

अर्थात् पाणि ग्रहण के मन्त्र पत्नी भाव के बोधक हैं, और पूर्ण पत्नी भाव को प्राप्त होना सप्तपदी के अनन्तर होता है ।

या० मिताक्षरा का वचन है "स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात्सप्तमे पदे' । अर्थात सप्तपदी के बाद पति गोत्र प्राप्त होता है ।

पारस्कर गृह्य सूत्र में लिखा है 'अथैनामुदीचीं (दिशमुदङ मुखीं) सप्तपदानि

प्रकमापत्येक मित्यादिना"। अर्थात् लाजा होम के बाद बधू को अग्नि की उत्तर दिशा में उत्तरोतर सात पद "एक मिषे विष्णु स्त्वानयतु" इत्यादि मंत्रों से चलावे ।

लिखा है :--

'मैत्री सप्तपदी प्रोक्ता सप्तवाक्याथवा भवेत्" । अर्थात् सप्त पद साथ चलने से अथवा सात वाक्य परस्पर बोलने से मैत्री दृढ़ होती है

सप्तपदी

वरोक्तिः—स्त्रीणां स्थितिर्वामपार्श्वे कथंत्वं दक्षिणे स्थिता । मया विवाहिता, दत्ता तवपित्रा चबन्धुभिः ॥१॥ उत्तिष्ठ वामभागं मे पत्निभावं भजप्रिये । यत्किंचत्तव

परन्तु स्थानाभाव के कारण आजकल कन्या के आगे पटरी पर सात आटे से रेखा डालें कन्या दायें पांव के अंगुठे से कमशः वर के प्रति पद चलने की आज्ञा करने पर रेखा को मिटावें ।

चित्तोऽस्ति तद्वदस्वममाग्रतः ।

हे प्रिये, स्त्रियें पति के वाम की ओर बैठती हैं। परन्तु आप क्योंदक्षिण की ओर स्थित हो । आपको मैं ने विवाह लिया है और आप के पिता तथा सम्बन्धियों ने आप को मुझे दिया है। उठो मेरे वाम की ओर स्थित होकर पत्नी बनो। आप के मन में यदि कोई बात है तो कहो ।

कन्योवाच-नदानेन विवाहोऽस्ति लाजा होमेन नैवही । विवाहस्तु तदाज्ञेयो यदा सप्तपदाक्रमः ॥ सन्तिमे सप्तवाक्यानि त्वया ग्राह्याणि सर्वदा । एवं यदि प्रमाणं ते वामाङ्गं संभजाम्यहम् ।

विवाह दान तथा लाजा होम से नहीं होता। विवाह तो तब हुआ जानना, जब सप्तपदी हो चुके मेरे सात वाक्य हैं यदि वह आप को स्वीकार हैं, तो मैं आप के वाम अंग में आती हुँ ।

ओं एक मिषे विष्णुस्त्वानयतु ।

विष्णु रूप मैं तुझे अन्न की वृद्धि के लिए प्रथम पद चलाता हूँ ।

कन्यावदति ॥ धनं धान्यं च मिष्टान्नं व्यंजनाद्यं च यद्गृहे । मदधीनं च कर्त्तयं कन्या आद्यपदेऽब्रवीत् ॥१॥

पहिले पाद में कन्या कहती है :—हे वर! घर में जितना धन धान्य और मधुर पदार्थ और भक्ष्य भोजनादि की वस्तुएं जो कुछ हैं वह सब मेरे आधीन करना और मेरा मान रखने के लिए जो कुछ धन बाहिर से आपको मिले वह घर में लाना, घर से बाहिर बिना विशेष कारण के कभी शयन नहीं करना और न ही भोजन करना यदि ऐसा स्वीकार हो तो मैं आप के वामांग आने के लिए प्रथम पद चलती हूँ ।

ओं द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु ।

विष्णु रूप मैं तुझे दूसरा पद बल की पुष्टि के लिए चलाता हूँ तेरा दूसरा पद हमारे घर

में सभी जीवों को बल युक्त बनावे।

कन्या० ॥ गृहे कर्माणि सर्वाणि मया कार्य्याणि सर्वदा। दासीव सर्वबन्धूनां भाजनानिचमार्जये। द्वितीये साब्रवीदिदम् ॥२॥

दूसरे पाद में कन्या कहती है। मैं घर के सब काम काज करूंगी, दासी की भांति रहुँगी। मीठा बोलूंगी, श्वसुर, सास, ज्येष्ठ, ननद, आदियों की आज्ञा का पालन करूंगी, स्वामिन! आप को स्मरण रहे कि आप ने मेरा पालन करना होगा।

ओं त्रीणिरायस्पोषाय विष्णुस्त्वानयतु।

विष्णु रूप मैं तुझे धन की पुष्टि के लिये तथा वृद्धि के लिये चलाता हूँ।

कन्या०॥ पालिताहं च दुःखेन मात्रा पित्रा चबन्धुभिः तैरेव दत्तासलिलं हस्तेगृह्याग्निसंनिधौ ॥

पुरोहित गुरु प्राज्ञ सर्वबन्धु समागमे।
जातिरन्या च मे जाता गोत्रं नाम कुलं तथा॥
सुखेन सर्वे जीवन्तु परन्तु न बलंमम्।
त्वयि नाथवती चास्मि कर्त्तव्य पालनंमम्।

तीसरे पाद में कन्या कहती है। मुझे मेरे माता पिता ने बड़े क्लेश से पाला है और उन्होंने ही अग्नि के समीप, पुरोहित, गुरु, और बुद्धिमान् सम्बन्धियों के सामने मुझे संकल्प कर के तुझे दे दिया है। मेरी जाति, कुल, गोत्र बदल गए हैं। सभी मेरे सम्बन्धी सुख से रहें, मेरे में कोई बल नहीं। आप के होते हुए स्वामी वाली हूँ आप ने मेरा पालन करना होगा।

ओं चत्वारि मायो भवाय विष्णुस्त्वानयतु॥

चतुर्थ पद में वर ने सुख की वृद्धि के लिये कहा।

कन्या० ॥ भवतः सुखमिच्छन्ती गौर्य्याराधन तत्परा

भविष्यामि त्वयास्वामिन् कर्त्तव्यं पालनं मम ॥

चोथे पाद में कन्या कहती है। मैं सब दुःख सुख आप के साथ सहन करूंगी। आप के क्रोध में होने पर मधुर वचन बोलूंगी। आप के सुख के लिए भगवती गौरी का पूजन करूंगी। परन्तु आपने मेरा पालन करना होगा।

ओं पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥

पांचवें पद में वर ने पशुओं के सुख के लिये कहा।

कन्या० ॥ कुटुम्बं पालनीयं च त्वया यौवनवार्द्धिके।
यद्यद्वाञ्छामिते स्वामिन्, तत्तद्देयंसदामम ॥
कोपश्चित्तो न वै कार्य्यःसदेयं प्रार्थना मम।
एवंयदि प्रमाणं ते वामाङ्गं संभजाम्याहम् ॥

पांचवें पद में कन्या कहती है। आपने युवा तथा वृद्धावस्था में कुटुम्ब का पालन करना होगा और जो कुछ मैं आप से उचित मांगूं आप मुझे वही देवें और बार बार मेरे

मांगने से कुछ न होना। मेरी यह सदा ही प्रार्थना है। यदि आपको यह स्वीकार है तो मैं आपके वाम अङ्ग की ओर आती हूँ।

ओं षड्ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥

छटे पद में वर ने छः ऋतुओं का सुख प्राप्त करने के लिये प्रार्थना की।

सर्वबन्धुजनाः स्वामिन् भवतो दासतां गताः।
जलपात्र कङ्कणाभ्यां दत्ताऽहं प्रेम पूर्वकम् ॥
त्वया कदापि नोवाच्यं, किं दत्तं तवबन्धुभिः।
अवश्यं सह संवासात् कलिर्वै जायते नृणाम् ॥

छटे पाद में कन्या कहती है। हे स्वामिन्; मेरे सम्पूर्ण संबन्धी आप के दास बन गये हैं, उन्हों ने प्रेम जल पात्र द्वारा कङ्कण बान्धकर मुझ को दिया है। कभी यह न कहना कि आपके सम्मन्धियों ने मुझे क्या दिया है। एक स्थान में रहने से प्रायः झगड़ा हो जाता है। क्योंकि मैं आपकी दासी हूँ, दास का अपराध स्वामी क्षमा करता ही है।

ओं सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु ॥

सातवें पद में वर कहता है कि हे सखे, तू पतिव्रतधर्म का पालन करती हुई भू आदि सात लोकों में प्रसिद्ध हो।

होमे यज्ञे विवाहे च कन्यादाने मखेव्रते ।
अञ्चलग्रन्थिमादाय भवतां वामांगसंस्थिता ॥
अर्द्ध पुण्यं गृहीष्यामि नत्वहं पावभागिनी ।
अर्द्धं पाप प्रदास्यामि चाङ्गीकार्यः यदित्वया ॥

सातवें पद में कन्या कहती है। हवन, यज्ञ, विवाह, कन्यादान और व्रत में आप के अंचल पकड़ कर वाम की ओर ठहरूंगी आप के पुण्य का आधा भाग लिया करूंगी। किन्तु पाप का नहीं। और अपना आधा पाप दिया करूंगी। यदि आप इसे स्वीकार करें तो

मैं आप के वाम आती हूँ। इस वाक्य के पाने पर कन्या के साथ सप्तमण्डल में पग रखे।

वर प्रतिज्ञा

आदौ धर्मधरा, कुटुम्ब सुखदा, तथ्यप्रियाऽभाषिणी,
क्रोधाऽलस्यविवर्जिता, सुखकरी नित्यं वचः कारिणी।
पित्रोर्मेऽपचितौ रताथ, भगिनी प्रेमार्द्रचित्ता तथा
इत्येवं सर्वगुणालिभूषिततनुः पाल्याभवित्रो मम॥

उद्याने मद्यपस्थाने परगेहे गमने तथा। पर
पुंसा रतिगर्ति हास्यं वर्ज्यं त्वया सदा॥

सत्य तथा प्रिय भाषण, क्रोध तथा आलस्य से रहित, मेरे वचन को मानना मेरे माता; पिता तथा भगिनी का प्रेम पूर्वक सत्कार करना इन समग्र गुणों करके युक्त होना यदि

तू मानती तो मैं तेरा पालन करूंगी। बा गिचे में, शराबियों के स्थान में न जाना, बिना कारण दूसरे के घर में कभी न जाना तथा पर पुरुष के साथ क्रीड़ा करना, गाना; बजाना हंसना छोड़ देना। गृह के भीतर सुख तथा दुःख को मेरे साथ भोगती हुई स्थित होगी तो मैं अवश्य तुम्हारा पालन करूंगा।

ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्कन्ध स्थितकुम्भादाम्र पल्लवेन जलमानीय तेनवरो वधूमभिषिञ्चति।

अग्नि से पश्चिम की ओर अपने आसन पर बैठकर दृढ़ पुरुष के कन्धे में स्थित जो कुभ, उससे सकुश आम्र पत्र द्वारा जल लेकर वर वधू था अभिषेक करे।

ओं आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमा-स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

जो अत्यन्त सुख के देने वाला तथा अत्यन्त शान्ति के देने वाला है वे तेरे दुःख को दूर कर असीम सुख को प्रदान करे।

फिर कन्धे पर स्थित कुम्भ से जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से वधू वर और अपने ऊपर अभिषेक करे ।

ओं आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे । ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरङ्गमाम वा यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जनयथा च नः इति तिसृभिर्वधूमात्मनश्चाभिषिञ्चति ॥ इति ।

हे जलो, आप सकल सुखों के देने वाले हो । आप हमें बल दो, जिस से हम परम सुख को पावें । जैसे मातायें अपने पुत्रों को अपने स्तनों को रस देती हैं इसी तरह आप हमें अत्यन्त कल्याणकारी रस का भागी बनाओ । जिन पापों के नाश के लिये आप हमें प्रेरणा करते हैं, हे जलो हमें वह बल दो ।

अथवरः सूर्य्यमुदीक्षस्वेतिवधू सम्बोधयेत् ।

वर वधू को कहे भगवान् सूर्य का दर्शन करो वधू नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ती हुई सूर्य के दर्शन करे।

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतजीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्चशरदः यतात् ॥ इत्यनेनवधू सूर्य्यं पश्यति।

इन्द्रादि देवताओं से स्थापना किया हुआ संसार का नेत्र चमकता हुआ उदय होता है इस भगवान सूर्य देव की कृपा से हम सौ वर्ष तक देखे, सौ वर्ष तक जीवें, सौ वर्ष तक सुने' तथा सौ वर्ष तक बोलते रहें और गरीबी से रहित रहें।

नोटः—यदि रात्रि का विवाह हो तो वर वधू को ध्रुव देखने के लिये कहे।

ओं ध्रुवमुदीक्ष्स्व ॥ ओं ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्यर्यमायि। महां त्वा दाद्। बृहस्पतिर्मया पत्या

प्रजावती संजीव शरदः शतम्। इति पश्येत्, सा यदि न पश्येत् तदापिपश्यामीतिब्रूयात् ।

हे वधू! मैं तुझे धवल श्री ध्रुव को दिखलाता हूँ, जिस से तुम मेरे पुत्र पौत्रादि का पालन करने वाली हो। इस लिये तुझ को ब्रह्मा ने मुझे दिया है। मेरे साथ सौ वर्ष तक जीवन को धारण करे।

यदि किसी कारण कन्या ध्रुव का दर्शन न कर सके तो भी कन्या कहे कि मैं ध्रुव को देखती हूँ। दर्शन के उपरान्त वर वधू के दायें कन्धे की ओर हाथ ले जाकर हृदय को स्पर्श करे॥

ओं मम व्रते ते हृदयंदधातु ममचित्तमनुचित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमनाजुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।

मैं अपने व्रत नियम में तुम्हारे हृदय को धारण करता हूँ मेरे चित्त के अनुकूल तेरा चित्त

हो। और मेरी आज्ञा को प्रसन्न होकर मान, प्रजापति मेरे लिए तुझे जोड़े।

अथ वधूमभिमन्त्रयति वरः।

वर वधू को अभिमन्त्रण करे।

फिर वधू को सिन्दूरीकरण करें आम्र पते में सिन्दूर डालकर और स्वर्ण की अंगूठी के स्पर्श से वर वह सिन्दूर स्त्रियों द्वारा लड़की की मांग में लगवा दे।

ओं सुमङ्गलीरियं वधूरिमाँ समेत पश्यत सौभाग्य-मस्यै दत्त्वा। याथास्तं विपरेनेत॥ इति मन्त्रेण।

हे सौभाग्यवती देवियो! और उपस्थित सज्जनो, यह वधू श्रेष्ठ मङ्गल वाली हो आप सब इसको सुहाग देकर लौटो।

अथ स्विष्टकृद्धोमः। ओं अग्नये स्विष्टकृते-स्वाहा, इदमग्नयेस्विष्टकृते। अथ स्रुवावशिष्टाज्यस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः। अयच होमो ब्रह्मणान्वारब्ध-

कर्तृकः। अथ संस्रव प्राशनम्।

अभिष्ट करने वाली अग्नि के लिए स्वाहा सुहुत हो। यह स्विष्टकृत अग्नि के लिये है मेरा नहीं। हुत का शेष घृत प्रोक्षणी पात्र में डाले और अन्वारब्ध करके आहुति देवे। हुत का शेष जो प्रोक्षणी पात्र में डाला गया है, उसको हाथ में लेकर भक्षण करे।

तत आचम्य

आचमन करे।

पूर्णपात्रं दक्षिणांचब्रह्मणे दद्यात्।

तब संकल्प कर दक्षिणा के सहित पूर्णपात्र ब्रह्मा के लिये देवे।

ॐअद्येत्यादि० देशकालादिसंकीर्त्तनानन्तरं, कृतैतद्विवाह होम कर्मणिकृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुक गोत्रायामुक

शर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।
इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात् । स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ।

अथ ब्रह्म ग्रन्थिविमोकः ।

नीचे लिखे मन्त्र से प्रणीता से जल लेकर सिर पर छींटे देवे ।

ओं सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु । इति प्रणीता जले पवित्रे गृहीत्वा शिरः सम्मृज्य ।

जल और औषधियें हमारे लिये सुख करने वाली हों ।

नीचे लिखे मन्त्र से ईशाण कोण में प्रणीता पात्र को पलट देवे ।

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः । इत्यैशान्यां सपवीत्रां सजलां प्रणीतांन्युब्जी-

कुर्यात् ।

जो हमारा शत्रु है, उसके लिए जल और औषधियें दुःख के देने वाली हों ।

ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्येनावधार्य वक्ष्यमाणमन्त्रेण हस्तेनैव जुहुयात् ॥

जिस क्रम से कुशाओं को स्थापित किया था, उसी प्रकार से उठाकर और घृत से लिप्तकर हाथ से हवन करे ।

ओं देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातु मित मनसस्पत इमंदेव यज्ञँ स्वाहा वातेधा स्वाहा ॥ इति बर्हिर्होमः ।

हे देवतो लोग ! आप लोग यज्ञ के जानने वाले हो, इस कारण विष्णु रूप यज्ञ को जान कर सुख पूर्वक जाइये । यह यज्ञ फल आपको अर्पण किया जाता है । आप सर्वोत्कृष्ट हैं आप के लिए सुहुत हो । यह आप के लिये है मेरा नहीं आप वायु को अर्पण करें ।

तत उत्थाय वधू दक्षिणहस्तेनस्पृष्टैः स्त्रुवस्थ

घृत पुष्प फलैः पूर्णाहुतिं कुर्य्यात्।

वर वधू के दायें हाथ से स्पर्श किए हुए स्रुव में जो स्थित घृत फल फूल है इन से आहुति देवे।

तत्र मन्त्रः ॥ ओं मूर्द्धानं दिवोऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् कविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तु देवाः स्वाहा। इदमग्नये।

स्वर्गादि लोक से परे परिच्छेद से शून्य और पृथिव्यादि लोकों में अनासक्त ब्राह्मणादियों को प्रकाश करने वाला, तथा वेश्वानर संज्ञा वाला ईश्वर सत्यस्वरूप जन्मादि षड्विकारों से रहित; सर्वत्र प्रकाशमान, सर्वज्ञ परमानन्द, भूत भविष्यत, से रहित, और उत्पत्ति तथा प्रलय में प्राणियों का आधार और देवताओं को उत्पन्न कर स्व २ कार्य में लगाने वाले उस परमेश्वर के लिए यह सुहुत हो। अग्नि के लिए है मेरा नहीं।

ततः उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणाऽनामि

काग्रेण ।

बैठ कर स्रुव से भस्म ले कर नीचे लिखे मन्त्र से भस्म धारण करे ।

उों त्र्यायुषं जमदग्नेः इतिललाटे ॥ कश्यपस्यत्र्या-युषम । इतिग्रीवायाम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषम् इतिदक्षिणांसे । तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ इतिहृदय ॥ अनेनैव क्रमेणवध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्य्यात् ।

जमदग्नि ऋषि की आयु से तिगुनी मेरी आयु हो । और कश्यप की आयु से त्रिगुणी हो ।

तत आचाराच्छणशङ्खशमी पुष्पार्द्राक्षतारोपणारूप सिन्दूरकरणं वरः कर्य्यात् ॥

आचार से वर कन्या के ऊपर पुष्प, शमीपत्र आर्द्रा अक्षताओं का प्रक्षेप करे । विवाह में उपस्थित स्त्री पुरुषों को कन्या तथा वर पर पुष्पादि, प्रक्षेप करने चाहिये ।

चतुर्थी कर्म

ततः चतुर्थ्यामपररात्रेः चतुर्थी कर्म तच्च गृहाभ्यन्तरे एवकार्यम् ।

विवाह के चौथे दिन और रात्री के अन्तिम प्रहर में चतुर्थी कर्म करना चाहिए ।

यद्यपि चतुर्थी कर्म विवाह से चतुर्थ रात्रि में ही करना लिखा है, तो भी आज कल लोग समय के अभाव से विवाह के साथ ही इस कर्म को कर लेते हैं । अतः जो पहले हवन किया हुवा है वहां पूर्णाहुति न करे और दोबारा कुशिकण्डिका भी न करे । परन्तु चतुर्थ दिन को चतुर्थी कर्म करे उन के हित के लिए यहां फिर कुशकण्डिका दी गई है ।

चतुर्थी कर्म विवाह का एक प्रधान अंग है । इसके बिना तो विवाह पूर्ण ही नहीं होता और कन्या को वधू नहीं कहा जा सकता । चतुर्थी कर्म का फल मार्कण्डये जी ने लिखा है ।

चतुरशीति दोषाणि कन्यादेहेतु यानि वै ।
प्रायश्चित्तकरं तेषां चतुर्थी कर्म ह्याचिरत ॥

अर्थात्—कन्या के शरीर में जो चौरासी दोष हैं उन के प्रायश्चित रूप यह चतुर्थी कर्म करना चाहिए। और भी लिखा है।

"यदा न कुरुते कर्म चतुर्थी व्रतमादितः।
इदं जन्मनि बन्ध्यास्यात् वैधव्यं जायते पुनः॥

अर्थात्—चतुर्थी कर्म न करने से स्त्री बन्ध्या और विधवा होती है।

ततउद्वर्तनादि कृत्वा युगलकाष्टातमुपविश्यस्नात्वा शुद्ध वस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधू वरौ प्राङ् मुखौ भवतः॥

तेलाभ्यङ्ग कर हलपंजाली पर बैठ कर स्नानकर शुभ वस्त्र पहिन घर में प्रवेश कर वर तथा वधू पूर्व मुख होवें।

ततः कुशकण्डिका प्रारम्भः-तत्रक्रमः जामातृ

हस्त परिमितां वेदी कुशैः परिसमूह्यतान् कुशानैशन्यां
परित्याज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फयेन स्रुवेण वा
प्रागग्रप्रादेश मात्रं त्रिरुत्तरोत्तरक्रमेणोल्लिख्योल्लेखन
क्रमेणानमिकांगुष्ठाभ्यामुद्‌धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तूष्णी
कांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वभिमुखं निदध्यात् ।

ततः पुष्पचन्दन ताम्बूलवासांस्यादाय-ओमस्यां
रात्रौ कर्तव्य चतुर्थी होम कर्मणि कृताकृतवेक्षण-
रूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृ कर्म कर्तुं चामुक गोत्रममुक
शर्माणंब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन

वा त्वामहं वृणे। इति ब्रह्माणं होतारं च वृणुयात्।

ओं वृतोऽस्मीतिप्रतिवचनम्।

ओं यथा विहितं कर्म कुर्वीति वरेणोक्ते।

करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्॥

ततो ऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य अग्निं प्रदक्षिणाकृत्यऽस्मिन् कर्मणित्वं मे ब्रह्माभवेत्यभिधाय। ओं भवानीति तेनोक्ते तं ब्रह्माणं कल्पितासनमुदङ्मुखमुपवेशयेत्।

ततः पृथुदक पात्रमग्नेरुत्तरः प्रतिष्ठाप्य प्रणीता-

पात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणोमुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थ भागमादायग्नेया-दीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्य्यन्तं, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं, ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं, कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं, साग्रमनन्तरगर्भकुशपत्रद्वयम् । प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली सम्मार्जनार्थंकुशत्रयम । उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम । समिधस्तिस्रः स्रुवः, आज्यम्,

षट्पञ्चाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वया वच्छिन्नाम् तण्डुल पूर्णपात्रम्, एतानि पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्वं पूर्वदिशि क्रमेण आसादनीयानि, ततः पवित्रच्छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमित पवित्रकरणम्।

ततः सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधायानामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रोक्षणी पात्रस्य सव्यहस्तकरणम्।

पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनम् प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम। ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादितवस्तु-

सेचनम् । ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानम्
आज्यस्थाल्याम् आज्यनिर्वापः । ततोधिश्रयणम् ।
तोज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण
पर्य्यग्निकरणम् । ततः स्रुवं प्रतप्य सम्मार्जनकुशा-
नामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवसम्मार्जनम् ।
प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो
निदध्यात् । तत आज्यस्याग्नेरवतारणम् । तत
आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम् । अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये
तन्निरसनम् । पुनः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम् ॥

उपयमन कुशान् वामहस्तेनादायोत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा तूष्णीं अग्नौ घृताक्तास्तिस्रः समिधः क्षिपेत्। तत उपविश्य प्रोक्षणी जलेनाग्निं प्रदक्षिणं पर्य्युक्ष्य पवित्रे प्रणीता पात्रे धृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः पातित-दक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत्राथारादारभ्याहुति चतुष्टयेन तत्तदा हुत्यनन्तरं स्रुवावस्थिताज्यं प्रोक्षिण्यां क्षिपेत् ।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इति मनसा।

ओं इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय। इत्याघारौ।

ओं अग्नये स्वाहा, इदमग्नये। ओं सोमाय स्वाहा

इदं सोमाय । इत्याज्य भागौ ॥

ततं आज्याहुति पञ्चतय स्थालिपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यन्तरं स्रुवा स्थितहुत शेषघृतस्य पृथूदकपात्रे प्रक्षेपः ततो ब्रह्मणान्वारम्भं बिना ।

नीचे की छः आहुतियों में हुत शेष पृथूदकपात्र में डाले अन्वारब्ध के बिना होम करे ।

ओं अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चितिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा, इदमग्नये ॥१॥

मन्त्रार्थ :—हे अग्ने, प्रायश्चित्त रूप तू देवताओं का दोष नाशक है आशीर्वाद की इच्छा करता हुवा मैं ब्राह्मण आपकी आराधना करता हूँ, कि इस स्त्री का पति से विरोध करने वाले शरीर के अवयव का नाश करो । यह अग्नि के लिए है मेरा नहीं ।

ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं वायवे ॥२॥

हे वायु देवता तुम इस स्त्री के संतान नाशक शरीर के अवयव का नाश करो। यह वायु के लिये है मेरा नहीं।

ओं सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा, इदं सूर्याय ॥३॥

हे सूर्य तू इस स्त्री के पशुओं के नाश करने वाले शरीर के अवयव का नाश करो यह सूर्य के लिए है मेरा नहीं ॥

ओं चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि

ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उवधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं चन्द्राय ॥४॥

हे चन्द्र ! इस के घर के नाश करने वाले शरीर के अवयव का नाश करो। यह चन्द्र के लिये है मेरा नहीं।

ओं गन्धर्व, प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उऽधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा, इदंगन्धर्वाय ॥५॥

हे गन्धर्व, आप इस स्त्री के यश के नाश करने वाले शरीर के अवयव का नाश करो। यह गन्धर्व के लिये है मेरा नहीं।

ततः स्थालीपाकेनजुहुयात् । फिर स्थाली पाक से आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये ॥ इति मनसा।

हुतशेषस्य पृथूदकपात्रे प्रक्षेपः ।

अग्निमाहुतिनवकेहुत शेषघृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः । अयञ्चहोमोऽन्वारब्धकर्तृकः । तत्र आज्यस्थाल पाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः ॥

नीचे लिखी नौ आहुतियों का हुतशेष (घृत) प्रोक्षणी पात्र में डाले तथा ब्रह्मा से अनवारब्ध होकर होम करे । स्थलीपाक तथा घृत दोनों मिला कर स्विष्ठकृत होम करे ।

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्वष्टकृते ।

ततआज्येन । फिर घृत से

ओं भूः स्वाहा, इदं भू ॥ ओंभुवः स्वाहा, इदं भुवः ॥

ओं स्वः स्वाहा इदंस्वः । एतामहाव्याहृतयः ।

ओं त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासि-
सीष्ठाः यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाँ सि
प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नी वरुणाभ्याम् ॥ १ ॥
ओं सत्वन्नो ऽग्ने ऽवमो भवोति नेदिष्ठो अस्या उषसो
व्युष्टौ अवयत्त्वनो वरुणँ रराणो ब्रीहिमृडीकँ सुहवो
न एधि स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥२॥ ओं आयाश्च-
ग्नेऽस्यनमिशस्तिपाश्चसत्वमित्व मयासि अयानो यज्ञं
वहास्ययानोधेहि भेषजँ स्वाहा, इदंग्नये ॥ ३ ॥ ओं
ये ते शतंबरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः

तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणायसवित्रेविष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥४॥ ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽदित्ये स्याम स्वाहा । इदं वरुणाय ॥५॥ एताः सर्वाः प्रायश्चित्तसंज्ञिकाः । ओं प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये । इतिमनसा, इति प्राजापत्यम् ।

ततः संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ॥ संकल्पः ।

फिर वर प्रोक्षणीपात्र का जल थोड़ा सा पिए । पूर्णपात्र दक्षिणा का संकल्प करके ब्रह्मा को दे ।

ओमस्यां रात्रौ कृते चतुर्थी होमकर्मणि कृताकृता-वेक्षण रूपब्रह्मकर्म पतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक गोत्रायामकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति दक्षिणां दद्यात् । स्वस्तीति पतिवचनम् ॥

ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ब्रह्म ग्रन्थि खोल दे ।

फिर पवित्रों द्वारा प्रणिता के जलसे नीचे के मन्त्र पढ़ कर अपने सिर पर मार्जन करे ।

ओं सुमित्रियान आव ओषधयः सन्तु । इति पवित्राभ्यांशिरः समृज्य ॥

फिर नीचे के मन्त्र से प्रणीतापात्र को ईशान कोण में औंधा कर दे ।

ओं दुमित्रियास्तस्मैसन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियञ्चवयं

द्विषमः इत्यैशान्यांदिशि पणीतान्युञ्जी कुर्य्यात्।

तत आस्तरणक्रमेण वर्हिरुत्थाप्य घृताक्त हस्ते-
नैवजुहुयात्।

फिर जैसे पहिले अग्नि के चारों ओर कुताएं रखी थीं उसी क्रम से उठाकर घी से भिगोकर नीचे लिखे मन्त्र से होम करे।

ओं देवा गातुविदौ गातु वित्वा गातुमित मनस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वातेधा स्वाहा, इदं प्रजापतये।

ततः पृथूदक पांत्रस्थंजलमाम्रपल्लवेनानीय वरो मूर्द्धिन वधूमभिषिञ्चति।

फिर पृथूदक पात्र के जल से आम्र पत्र से नीचे लिखे मन्त्र से वर वधू के मस्तक पर अभिषेक करे।

ओं या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूजोरघ्नी तत एनां करोमिसा-जीर्यत्वं मया सह । श्री अमुकदेवीति मन्त्रेण । ततो वधूस्थालीपाकं प्राशयति वरः ।

हे कन्ये, अमुक देवी जो तेरे पति को नाश करने वाला सन्तान को नाश करने वाला, पशुओं को नाश करने वाला, घर को नाश करने वाला, यश को नाश करने वाला, ऐसा जो तुम्हारे शरीर में अवयव है उन में इस अभिषेक से इसे नाश करता हूँ। सो शुद्ध होकर तू मेरे साथ वृद्धावस्था तक जी ।

नीचे के मन्त्रों से वर वधू को स्थाली पाक खिलाए ।

ओं प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि, ॥१॥ ओं अस्थि-भिस्तेऽस्थीनि सन्दधामि ॥ २ ॥ मांसैस्ते मांसानि,

संदधामि ॥३॥ त्वचा ते त्वचं सन्दधामि ॥४॥ इतिमन्त्र-चतुष्टयेन प्रतिमन्त्रान्तमन्नं प्राशयेत् ।

मैं अपने प्राणों के साथ तेरे प्राणों को, अस्थियों के साथ अस्थियों को मांस के साथ मांस को और त्वचा को मिलाता हूँ ।

ततो वधूहृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठत् ।

वर वधू के हृदय को स्पर्श करके नीचे का मन्त्र पढ़े ।

ओं यत्ते सुसीमे हृदयं दिविचन्द्रमसिश्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ इति ॥

पूर्णाहुति—वर उठकर वधू के दक्षिण हाथ से छुए हुए स्रुव के द्वारा पुष्पफल घृत को नीचे लिखे मन्त्र से पूर्णाहुति करे ।

अथ कङ्कणमोचणादीनियुत ग्रन्थि विमोकादीनि आचार प्राप्तानि । तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तस्पृष्ट स्रुवेण घृतफल पुष्पपूर्णेन पूर्णाहुतिं कुर्य्यात् ।

ओं मूर्द्धानं दिवोऽरतिं पृथिव्याः वैश्वानरमृतआजा तमग्निं कविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः स्वाहा । इति मन्त्रेण पूर्णाहुतिः ।

ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्र गृहीत भस्मना ओं त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे । ओं कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ओं यद्देवेषु त्र्यायुषमिति

दक्षिणबाहु मूले, एवं बध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्यात् । तन्नोऽस्तु इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः । तत आचार्याय भूयसीं दक्षिणा दद्यात् ।

पुषपांजलियां

नीचे लिखे मन्त्रों से पंडित कुम्भ से जल लेकर तीन कुशों से अथवा पांच पलव से घर तथा वधू वर अभिषेक करे ।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संङ्कर्षणोविभूः ॥१॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयायते अखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निऋ॑तिस्तथा ॥२॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षः शिव

स्तथा । ब्रह्मणासहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदास्तथा एतेत्वामभि
षिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥४॥ कीर्ति लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा
पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः । बुद्धिर्जातिर्वपुर्ऋद्धिस्तु-
ष्टिश्चमातरः ॥५॥ अस्त्राणि सर्व शास्त्राणि राजनो
वाहनानिश । औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्चये ॥६॥
एतास्त्वांमभिषिञ्चन्तु देव पत्न्यः समागताः । आदित्य-
श्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्कजाः ॥७॥ ग्रहास्त्वाम-
भिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः । देवदानव गन्धर्वा पत्त

राक्षस पन्नगाः ॥८॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्चये ॥९॥

पहिले वधू पर पुष्प प्रक्षेप करना।

गायत्री ब्रह्मणों यद्वल्लक्ष्मी दैवपतौयथा। उमा यथा महेशस्य तथा त्वं भवभर्तरि ॥१॥ मन्दोदरी रावणस्य राघवस्य च जानकी। कुन्ती च पाण्डराजस्य तथात्वंभवभर्तरि ॥२॥ पुलोमजा यथेन्द्रस्य वसुदेवस्य देवकी। लोपामुद्रा ह्यगस्त्यस्य तथा त्वं भव भर्तर ॥३॥ गौतमस्य च यथाहल्या पांडवानां च द्रौपदी ॥ वालिन-

श्चयथातारा तथा त्वंभवभर्तरि ॥४॥ रांथवेन्द्रे यथा सीता विनताकश्यपेयथा। पावकेचयथा स्वाहा तथा-त्वंभवभर्तरि ॥५॥ उषा यथा ऽनिरुद्धस्य दमयन्ती नलस्य च। श्यमली ऋतुपर्णस्य तथा त्वं भव भर्तरि ॥६॥ छाया यथैव चादित्ये यथैवेन्दौ चरोहिणी। रोहिणी वसदेवे च तथात्वंभवभर्तरि ॥७॥ शान्तनौ च यथा गङ्गा सुभद्रा च यथार्जुने। धृतराष्ट्रे च गान्धारी तथात्वंभवभर्तरि ॥८॥ अत्रौ यथानुसूया च जमदग्नौ चरेणुका। श्रीकृष्णे रुक्मणी यद्वत्तथात्वंभवभर्तरि ॥९॥

सुदक्षिणा दिलीपे तु राघवेतु विदर्भजा । अरुन्धती
वसिष्ठे च, तथात्वंभवभर्तरि ॥१०॥ जानकी च यथा
रामे उर्मिला लक्ष्मणे यथा । कुशे कमुद्वती यद्वत्तथा
त्वंभवभर्तरि ॥११॥ अनन्तस्य यथा लक्ष्मी वसदेवस्य
रोहिणी । रेवती वलभद्रस्य तथा त्वं भवभर्तरि ॥१२॥
मेनाहिमालये यद्वन्मेरौ मरुवती यथा शिशुमारे
भ्रमीयद्वत्तथात्वंभवभर्तरि ॥१३॥ ईश्वरे प्रकृतिर्यद्वत्का-
लिकाभैरवे यथा । अम्बिका च मृडेयद्वत्तथा त्वंभव-
भर्तरि ॥१४॥ रेवति बलभद्रे च साम्बे चलक्ष्मणा यथा ।

रुक्मिसुता कृष्णपुत्रे तथात्वंभवभर्तरि ॥ १५ ॥
भास्करस्य प्रभा यद्वद्रोहिणी सिन्धुजस्य च । कुञ्जे
तेजो मयी यद्वत्तथा त्वं भवभर्तरि ॥१६॥ संवरे तपनी
यद्वद्भरते च शकुन्तला । मेरुदेवी यथा नाभौ तथा
त्वंभवभर्तरि ॥१७॥ निऋतेश्च धृति यद्वदवारुणी
वरुणस्य च ॥ वायो वेंगवती यद्वत्तथा त्वं भव भर्तरि ॥१८॥
सुवर्चला यथार्कस्य यथा चन्द्रस्य रोहिणी । मदनस्य
रति यद्वत्तथा त्वं भव भर्तरि ॥१९॥ सूर्यस्य तपति
चैव वसुदेवस्य रोहिणी । चन्द्रस्य रोहिणी यद्वत्तथा त्वं

भवभर्तरि ॥२०॥ यथा च बोधिनी सौम्ये भारती वाक्पते
र्यथा। भार्गवे वलिनी यद्वत्तथा त्वं भव भर्तरि ॥ २१ ॥
सूर्य पुत्रे यथा सौम्या तमसस्तामसी यथा। केतौ भागवती
यद्वत्तथा त्वं भव भर्तरि ॥२२॥ वासवस्य यथेन्द्राणी काली
वैश्वानरस्य च। धर्मिणी धर्मराजस्य तथा त्वं भव भर्तरि
॥२३॥ यक्षिणी धनदे यद्वत्पार्वती शङ्करस्य च । सावित्री
वेदसो यद्वत्तथा त्वं भव भर्तरि ॥२४॥ अतिथीनाम-
तान्साधून्बालान्वृद्धान् गरूँस्तथा, पूजयन्त्या यथा
न्यायं शश्वद्दुच्छन्तुतेसमाः ॥२५॥ पृथिव्यां यानि

रत्नानि गुणवन्ति गुणान्विते । त्वंतान्यप्नुहि कल्याणि सुखिनीशरदां शतम् ॥ २६ ॥ धनपुत्रवती साध्वी सततं भर्त्तृ वत्सला । मनोज्ञा ज्ञानसहिता तिष्ठत्वं शरदां शतम् ॥ २७ ॥

नीचे लिखे मन्त्रों से दोनों पर पुष्प फैंकना ।

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा । कावेरी सरयु महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिकाः । क्षिप्रा-वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी । पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥

ब्रह्मावेदपति शिवः पशुपतिः शक्रः सुराणांपतिः
विष्णुः यज्ञपति हवि हुतपतिधर्मं पितृणां पति । प्राणो
देह पति सदा गतिरयं ज्योतिष्पति चन्द्रमा ॥
सर्वे ते पतयः कुबेर सहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम्
आयुर्द्रोणसुतेश्रियो दशरथे शत्रुघ्नयो राघवे । ऐश्वर्यं
नहुषेगतिश्चपवने मानं च दुर्योधने । शौर्यं शान्तनवे
बलं हलधरे सत्यं च कुन्तीसुते ॥३॥ आदित्योऽग्नियुतः
शशी सवरुणो भौमः कुबेरान्वितः । सौम्यो विष्णुयुतो
गुरुः समघवा देव्यायुतो भार्गवः ॥ सौरिः केतुयुतः सदा

सुरवरो राहुभुजङ्गेश्वरः, माङ्गल्यं सुखदुःखदान निरताः
कर्वन्तु सर्वैग्रहाः ॥४॥ यावदिन्द्रादयो देवा यावच्चन्द्र
दिवाकरौ । यावद्धर्मकिया लोकेतावद् भूयात्स्थितिस्तवेति
॥५॥ आयुष्मान्भवपुत्रवान्भव भव श्रीमान्यशस्वी भव ॥
प्रज्ञावान्भव । भूरि भूति करुणो दानै कनिष्ठो भव ॥
तेजस्वी भव वैरि दर्पदलने व्यापार दत्तो भव श्री
शम्भोर्भव पाद पूजनरतः सर्वो कारो भव ॥६॥

केवल वर के ऊपर पुष्प फैंकने चाहिए ।

ॐ श्री मत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-

श्चन्द्र भास्कर वित्तपाल वरुणा प्रेताधिपाः वैग्रहाः प्रद्युम्नो नलकूबरः सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्कन्धः शक्तिधरः च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनम्, यद्वद्विष्णु पदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम्। गङ्गावाहपथत्रयं सविमलं वेदत्रयं त्रिस्वरं, संध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥ ब्रह्मावेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यश्च चक्षुपति, शक्रो देवपतिः यमः पितृपतिः स्कन्धश्च सेनापति यक्षो वित्तपति हरिश्च जगतां वायुः पतिः प्राणि

नामन्ये ये पतयो वसन्ति सततं कवन्तु वो मंगलम् ॥३॥
गौरी श्रीरदितिश्च कद्रु सुभगा भूमिः प्रपूर्णां शुभा
सावित्री तु सरस्वति वसुमति सत्यव्रता ऽरुन्धति । स्वाहा
जाम्बवती च रूकमभगिनी दुःस्वप्न विध्वंसिनी, वेला
चाम्बुनिधेः समीनमकरा कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ४ ॥
वाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिव्यासो वशिष्ठो भृगु
जाबालीजमदग्निरत्रि जनको गर्गों गिरा गौतमः ।
मान्धाताऋतुपर्णा वेन सगरा धन्यो दिलीपीनलः पुण्यो
धर्मसतो ययाति नहुषौ कुर्वन्तुवो मङ्गलम् ॥ ५ ॥ गंगा

गोपती गोमति गणपति गोविन्द गोवर्धनौ, गीता गोमय गोरजोगिरि सता गंगाधरो गौतमः। गायत्री गरूड़ो गया गिरीपतिर्गम्भीर गोदावरी, गन्धर्वो ग्रह गोपगो-कुलगणाः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ६ ॥ लक्ष्मी, कौस्तु-भपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा, गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगना । अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनु शङ्खोऽमृतं चाम्बुधेः, रत्नानीति चतुर्दश-प्रतिदिनं कुर्वन्तु, वो मङ्गलम् ॥७॥

दीर्घायुभवजीववत्सरशतं नश्यन्तु सर्वापदः, स्वास्थ्यं

सम्भज मुञ्च चञ्चलधियं लक्ष्म्येकनाथोभव । किं ब्रूमोभृगुगौतमात्रिकपिलव्यासादिभिर्भाषितम्। यद्रामस्य पुराभिषेक समये तच्चास्तुतेमङ्गलम् ॥ ८ ॥ आयुर्बलं विपुलमस्तु सुखित्वमस्तु सौभाग्यमस्तु विशदा तव कीर्तिरस्तु । श्रेयोऽस्तु धर्ममतिरस्तु रिपुक्षयोऽस्तु सन्तान वृद्धिरभिवाञ्छितसिद्धिरस्तु ॥६॥

दोनों शिरों का जोड़ना, शगण माला धारण करवाना छायापात्र वारणा इत्यादि रसमें करनी चाहिये।

इति श्री पं० शिवराम दत्तात्मज ज्योतिषाचार्येण प० रामशरण कृत विवाह पद्धति भाषा टिका समाप्तः ।

अथ खटवादानम्

यजमान स्त्री ग्रन्थिबन्धन करके उत्तर अभिमुख बैठे और वर कन्या को खट पर पूर्वभिमुख बिठावे। और यजमान गणेशादि पूजन करे। गणपति पूजन के अन्तर नीचे लिखे मन्त्र से खट को स्नान करावे।

ओं नमोस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि शिरोरुवाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटि युगधारिणे नमः। इति खटवांगंस्नाप्य। ओं सोपकरण खट्वायै नमः॥

फिर खट को मंगल सूत्र बांधकर और गन्धाक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प करे।

संकल्पः–ओं तत्सदऽद्येति॰श्रुति स्मृति पुराणागम प्रतिपादित सकृत फलोप त्ति पूर्वक श्री लक्ष्मी नारायण

प्रसाद परस्परंह्यावज्जीवाऽखण्ड सुख पत्र पौत्र धन
धान्य विवृद्धि धर्मार्थ काम प्राप्त्युत्तर स्वर्ग लोक,
बैकुण्ठ लोक कोटिकल्प सुखपुर्वक निवासेह कन्या
गौरिं भगवती वत्सौभाग्य चिरञ्जीव संतति, शक्तिकृत
यथा विधि ज्योतिष्टोमातिरात्र राजसूयाश्वमेध दर्श
पौर्णमास यज्ञ मरुस्थल कूपवापी तड़ागकरण, भूमिदान
गौदान गजदानाश्वदानाद्यनेक विधदान गंगा, यमुना
सरस्वती नर्मदा कावेरी सिधु वितस्ता चन्द्रभागो
रावती विपाशाशतद्रू देविकादि तीर्थ काशी काञ्च्य-

वान्तिका मथुरा द्वारका अयोध्या मायापुरी, कुरुक्षेत्र, प्रयागराज श्री जगन्नाथ केदारनाथादि विविध क्षेत्र दर्शन स्पर्शन, स्नान पानावगहनजन्य सुकृतावाप्ति पूर्वकं खट्वारूढ लक्ष्मी स्वरूपिणी कन्या विष्णु रूपवर प्रसन्नता सिद्धिहेतवे इमां सपीठ खट्वामुक्ता-नागिरो दैवत कामेतदग्नि देवताक सुवर्णभरण चन्द्र-देवताकं रजिताभरण बृहस्पतिचन्द्र देवताकं कौशेय कार्पासश्वेतरक्त पीतहरित चित्रितवस्त्र विश्वकर्म-देवताकरीति कांस्यलोहभाजन प्रजापति देवताकं

पक्वान्नदुग्धोदनादि चन्द्रदेवताकरजित मुद्रिकाऽन्यात् स्व स्व देवताकद्रव्योपेतां यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय वराय सपत्नीकाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

फिर जल से भरा हुआ जो कमंडुल है उससे जल गिराते हुए यजमान लाट की प्रदत्तिणा करे ।

'ओंयन्मयाद्यकृत दानं स्वल्प वा यदि वावहु ।
तेनमे पुत्रपौत्राणां भवेद्वृद्धिरनुत्तमा ॥

यह मन्त्र पढ़ते हुए यजमान परिवर सहित कन्या और वर के पीछे पूर्व मुल करके खड़े हो जावें ।

ओं चिरञ्जीवतु में माता आरोग्यं चास्तु मे पिता भ्राता भवतु दीर्घायर्धनधान्यं गृहे सदा ॥ इति ॥

अथ गजदन्त संकल्प

गजदन्तविनिर्मित भुजा भूषण संकल्पः—ओम् अद्य० आत्मनः कायिकवाचिक मानसिक विविधपाप निवृत्यर्थं विष्ण लोक निवासकामनया कर्तव्यकन्या विवाह कर्मांग-भूतं गजदन्त विनिर्मितं सौभाग्यरुपम इदं भुजाभूषणं गंधर्व दैवतं यथा नाम गोत्रायै कन्यायै दातुमुत्सृजे।

गोत्रोच्चारण संकल्प—ओं तत्सद्येति० कृतैतत्स्वकीय कन्यादानकर्मांग भूत स्वकुलपुरोहितद्वाराकारित पितृ-प्रमुख त्रिपरुष प्रवरगोत्र नामोच्चारण मन्त्र पाठ कर्म

साफल्य प्राप्ति पूर्वकं इदं दक्षिणाद्रव्यं रजितं चन्द्र दैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुमत्सृजे।

कन्या विवाहकर्मकृत दक्षिणा संकल्पः—ओं तत्सदद्येति॰ कृतै तदश्वमेधादि यागसमफल प्रदायकं सुख सम्प्रदायकं कन्या दान रूप विवाह कर्म मन्त्रपाठोपयोगीदं दक्षिणा द्रव्यं रजितं चन्द्र दैवतं यथा नाम्ने गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

वरपक्षे गोदान संकल्पः—ओं तत्सदद्येति॰प्राग्भवीय-जन्मादिदुष्कृतजन्य स्त्रीवियोगाद्यनिष्ट निवारणोत्तरस्व-

धर्मपत्नी सहितपरम सुखसन्ततिप्रवृद्धि रूपेष्टापत्ति प्रवृद्धये यजमान कर्तृक कन्यादान गृहीत प्रतिग्रह जन्यदोष निवारणार्थमदं गोदान प्रतिनिधित्वेन सुवर्ण-मूल्योपकल्पितं रजित चन्द्र दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

वर पक्षेगोत्रोच्चारण संकल्पः—ओं तत्सदद्येति स्वकीयोद्विवाह सत्संस्कार कर्मांगभूत्स्वकुल पुरोहित द्वारा कारित पितृ प्रमुखस्त्रिपुरुष प्रवर गोत्रनामोच्चारण मन्त्र पाठ कर्म साफल्य प्राप्तिपूर्वकम् स्त्री द्वारा त्रिवर्ग

सिद्ध्यनन्तरायुः पुत्रपौत्र धन धान्य समृद्धि काम इदं दक्षिणा द्रव्य रजितं चन्द्र दैवतं यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥

वर पक्षे मन्त्रोच्चारण संकल्प—

ओं तत्सदद्येति० श्रुति स्मृति पुराणागम प्रतिपादित पुण्यफल प्राप्तिकाम श्रीलक्ष्मी नारायण प्रसाद करण यावज्जीवपत्न्यासहायुरारोग्य सम्पत्ति समृद्धि पूर्वकं परमसुख प्राप्तये धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थंसत्संस्कार स्वकी-योद्वाह कर्म मन्त्र पाठोपयोगीदं दक्षिणाद्रव्यं रजितं

चन्द्रदैवतं यथानाम्नेगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

जपसंकल्पः–ओं तत्सद्येति० श्रुतिस्मृति पुराणागत प्रति पादित पुण्य फल प्राप्ति पूर्वक कार्य वाङ् मनः जन्मलग्न वर्षलग्न क्रूर भुवन स्थितसूर्यादि नवग्रह तत्तदशाधिकरणक क्रूर फल निवृत्ति श्री महामृत्युञ्जय प्रसादोपदानक विवाहित वधूसमेत सर्वायुः पर्यन्त सुख संभोग पुत्र पौत्रादि वंश धन धान्य विवृद्धि समस्त शत्रुयज्ञविनाशन तथा सकलारिष्ट निवारणोत्तर सकल मनोभिलषित शुभवाञ्छासिद्धये सहस्र परिमितं वेदोक्त

त्रियम्बकं यज्ञामहे' इत्यादि मन्त्रस्य जपं कारयितुमे भिर्वरुण द्रव्यैरमुक गोत्रममुकशर्म्माणं ब्राह्मणं त्वामहंवृणे।

छाया पात्र--ओं तत्सद्येति० स्वकीय विवाह कर्मांगत्वेन त्रिविधदूरित निवारणानन्तरादित्य प्रमख नवग्रह जन्यारिष्टोपशमनोत्तरस्वशरीरारोग्यहेतवे इदं मुखावलोकित घृतपूरितं कांस्यपात्रं दक्षिणा सहितं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

(छायापात्र का फल) घृतेन वर्धते आयः घृतेन वर्धते बलम्।
घृतेन वर्धते तेजः घृत दर्शनं पाप विनाशनम्॥

पूज

वस्तु आदि (लड़की की पूज के लिये) सात गुड़ की रोड़ियां एक परात लड्डुओं की २ तयोर । २ चदरें (एक नानी १ दादी को) ७ या ९ फुलकारियां या दुपटे, केसर पुष्पमाला । १ भूषण (जेवर) साहे चिठी ७ रुपये चार पैसे (१ रु० ४ पैसे लड़के की झोली के पांच रुपये पून के साथ (१) रु० पुरोहित का) मौली, कन्या या वर की पटड़ी को मौली बांध कर वर को उस पर विठा कर गणपत्यादि पूजन करवा कर कुल देवता का पूजन करवावे फिर झोली में साहे चिठी और टेवा एक एक रुपया चार पैसे लड्डु गुड़ इत्यादि डाल कर फिर पुरोहित साहे की चिठी सुनावे मुंहचुला कर वारा फेर करा कर उठादे इसको पूज कहते हैं ।

लड़की की पूज में ऊपर लिखे सामान को किसी से उठवा कर जल के मेल से लड़के वालों के घर में लेज कर लड़के की माता को पीढ़ी पर बैठा कर उसकी झोली में डाल देना ।

जोड़े का मेचा

पूज के बाद पूज के दिन ही होता है इस में वर का पुरोहित किसी टोकरी में २१ लड्डु लेजा-कर झोली डालदे

माईयां

तेल और वटना की प्रतिष्ठा करवा कर कन्या वा वर के सिर में घास की कूँची से सम्बन्धियों द्वारा तेल लगाना और वटना हाथ पर लगाना इस बात माईयों का कपड़ा तथा गरी छुहारा (नानकों से आता है) झोली में डाल देना इत्यादि शांति यह हमारा कात्यानी शांति मंगवा कर उस के अनुसार करवायें